कुंवर सिंह

वीर रस से भरपुर क्रान्तिकारी नाटक

श्री चतुर्भुज एम. ए०

कुँवर सिंह

सन् १८५७ ई० के नेता

[खूनी अक्षरों में लिखा हुआ वीररस-प्रधान ऐतिहासिक नाटक]

लेखक

अनेक नाटकों के रचयिता और कहानीकार

श्री चतुर्भुज, एम० ए०

आगे प्र० बुक सेलर न्यू मार्केट पटना-१
नाटक, भोजपुरी, मंत्र, सिक्की, उपन्यास
अशोक, धार्मिक पुस्तक पाये जाते हैं

प्रकाशक

दिल्ली पुस्तक सदन

गोविन्द मित्रा रोड, पटना-४

कुँवर सिंह

नाटककार

श्री चतुर्भुज, एम० ए०

मूल्य : ३·००

सर्वाधिकार : प्रकाशक

प्रकाशक : दिल्ली पुस्तक सदन, पटना-४

संस्करण : नवम १९७६

नाटककार : श्री चतुर्भुज, एम० ए०

मूल्य : तीन रुपये

मुद्रक : कमल प्रिन्टिंग वर्क्स,
गोविन्द मित्र रोड, पटना-४

लेखक के दो शब्द (प्रथम संस्करण से)

कुंवर सिंह" की कहानी बिहार के निवासियों की जुबानी है। जिस तरह सन् १८५७ ई० के स्वातन्त्र्य-युद्ध में झांसी की रानी, तात्या टोपे, राव साहब, बहादुरशाह, नाना साहब आदि वीरों ने कई जगहों पर नेतृत्व किया था, उसी तरह कुंवर सिंह ने भी बिहार की पवित्र भूमि को विदेशियों से उद्धार करने के उद्देश्य से रणभेरी बजाई थी। यह हमारा दुर्भाग्य है कि इतिहासकारों के पक्षपात के कारण देहाती कुंवर सिंह का नाम कई स्थलों पर आया तक नहीं, हालाँकि कुंवर सिंह के भयानक शौर्य से एक नहीं- आठ ब्रिटिश- सेनापति पराजित हुए थे। इस वृद्ध वीर के अचानक बनारस पहुंचने की सूचना पाते ही इलाहाबाद में ठहरे हुए गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग का भी वज्रहृदय काँप उठा था! जब हमारा देश आजाद हुआ है, तो हम उस शहीद की पूजा कर रहे हैं।

शूर-शिरोमणि बाबू कुंवर सिंह के चरित्र को रंगमंच के माध्यम से जनता के सामने रखने की मेरी प्रबल अभिलाषा थी। दो वर्षों की मेहनत के पश्चात् भी मुझे आवश्यक मसाले न मिल पाये। फिर भी, जो कुछ मिल सका उसे हमने नाटक-रूप में रखा है। नाटकीय सौन्दर्य की पूर्ति और कथानक के क्रम में दृढ़ता लाने के लिए कल्पना का भी सहारा लेना पड़ा है। "माया" का चरित्र बिल्कुल काल्पनिक हैं और उसके द्वारा लेखक ने आज की अपढ़ महिलाओं की समस्या को सामने रखा है। नाटक में एक गीत है, जो श्रीमती लीला देवी ने दिया है।

मेरे नाटकों को रंगमंच और हिन्दी-प्रेमियों ने अपनाकर मेरा उत्साह बढ़ाया है, हिन्दी में रंगमंच के योग्य नाटक नहीं के बराबर हैं। इस कमी को ध्यान में रखकर इस नाटक को लिखा गया है।

इस नाटक का सफल अभिनय बिहार की राजधानी पटने में लेखक के निर्देशन में ही काफी प्रेस-प्रतिनिधियों और कलाकारों के समक्ष हो चुका है और लोगों ने मुक्त कंठ से इसकी प्रशंसा भी की है।

—चतुर्भुज
बख्तियापुर, पटना

पात्र-परिचय

अभिनय की प्रथम रजनी के कलाकार

पुरुष-पात्र

कुंवर सिंह	: जगदीशपुर-नरेश	: राणा राजेन्द्र
अमर सिंह	: कुंवरसिंह के भाई	: मो० युनुस
हरेकृष्ण सिंह	: कुंवर सिंह के मंत्री	: जयनंदन प्र० सिन्हा
रणदलन सिंह	: कुंवरसिंह के सेनापति	: अनन्त कुमार
रणजीत सिंह	: दानापुर के विद्रोही सैनिक	: डी० पी० वर्मा
पीर अली	: पटने का एक देशभक्त	: चक्रधर
वैद्यराज	: कुंवर सिंह के राजवैद्य	: शिशिर कुमार
टेलर	: पटने के कमिश्नर	: चतुर्भुज (लेखक)
आयर	: ब्रिटिश सेनापतिगण	: भागवत प्र० श्रीवास्तव
डगलस	: ,,	: रामेश्वर प्रसाद
लूगार्ड	: ,,	: पी एम० कौर
प्रहरी	: ,,	: कन्हैया लाल
सैनिकगण	: ,,	: हंसराज सिद्धेश्वर प्र

स्त्री-पात्र

माया	: हरेकृष्ण की विधवा कन्या	: रमा कुमारी (रोजी)

सर्वप्रथम वीणा-पाणी-अर्चना (१९५२) के उपलक्ष में "मगध कलाकार (Magadh Artists) द्वारा, बी० बी० रेलवे इन्सटिट्यूट (बख्तियापुर) अभिनीत और श्री चतुर्भुज द्वारा निर्देशित ।

प्रथमांक

प्रथम दृश्य

[स्थान : पटने में कमिश्नर मि० टेलर का आफिस । मि० टेलर सिगार पी रहे हैं । सामने पीरअली खड़ा है । उसके दायें-बायें दो सशस्त्र सैनिक हैं । पीरअली के वस्त्र फटे हैं और वेश अस्त-व्यस्त है । साहब की मेज पर कागज पड़े हैं ।]

टेलर —पीरअली, तुम हमको जानटा ? हम हय पटना का कमिश्नर टेलर—ब्रिटिश गवर्नमेंट का एक औफिसर । हम तुमको चुटकी में मसलने सकटा । गोरा सरकार हमको कड़ा औफिसर जानटा। इसी से हमको पटना का कमिश्नर बनाया । तुम ब्रिटिश गवर्नमेंट के एगेंस्ट प्रोपेगेन्डा करटा । यू चैलेन्ज दि ब्रिटिश गवर्नमेंट । यू चैलेंज कमिश्नर टेलर । यू चैलेन्ज दि लायन । पीरअली, यू आर कमिटिंग ब्लन्डर । भारी भूल । तुम गरीब आडमी । हमारा बाट मानो । समझने सकटा ?

पीरअली--मैं खूब समझता हूँ । गोरी सरकार की चालाकी को कौन नहीं जानता ? कौन नहीं जानता कि दो भाइयों को आपस में लड़ाना ही आप जैसे कड़े और शेरे-दिल आफिसरों का काम है ? फिर भी, मैं जानना चाहता हूँ कि आप मुझसे क्या करने के लिये कहते हैं ?

टेलर —टुम बारिसअली को जानटा ? बारिस—दि पुलिस जामादार आफ टिरहुट । ही हैज बीन हैंग्ड । उसको हम फाँसी पर लट- काया । दैट ब्लडी अली करीम आफ गया । ही एसकेप्ड । व जान बचाकर भाग गया । हम उसको भी फाँसी डेगा । दे आ योर फ्रेड्स । ये लोग टुमारा साथी हय । टुम सब क्रिमन- हय । आल आफ यू आर डेंजरस—खतरनाक । लेकिन टेल- टुम सबको डेखने सकेगा । टुम सबको अपना बूट से क- करेगा । हम पटना में गोरा और सिख पलटन भर दिया हय हर आडमी के घर में गोरा को घुसा डेगा । हम टुमारा घर अपना पलटन का कैम्प बनायेगा । यू आर एजिटेटेड । हाः ह हाः । आई डोन्ट माइन्ड ।

पीरअली--साहब, मेहरबानी करके आप साफ-साफ बतायें कि मुझे यह पर क्यों बुलाया गया है ? आप मुझसे क्या चाहते हैं ?

टेलर —हाः हाः हाः । आई अन्डरस्टैन्ड योर फीलिंग्स पीरअली । फील इनसल्टेड । दैट्स राइट । बट आई हैव एवरी राइ टु क्रश यू—माइन्ड इट काला आडमी ।

पीरअली--जुबान सम्भालकर बातें कीजिये कमिश्नर साहब ।

टेलर —शट अप यू रैस्कल ।

पीरअली--साहब, आप भूल रहे हैं कि मेरी नसों में भारत का गरम खू जोश पैदा कर रहा है । जुबान पर लगाम दीजिये वरना.....

टेलर —(पीरअली के गाल पर तमाचा मारकर) शट—आई से ।

पीरअली--(गाल को सहलाता हुआ) यह मि० टेलर का तमाचा पीरअल को नहीं लगा है । यह गोरी सरकार का तमाचा हिन्दुस्तान को लगा है । हिन्दुस्तान अब सोया नहीं रहा मि० टेलर । उसकी सदियों की नींद टूट चुकी हैं, उसकी जवानी उसे वापस मिल चुकी है । आपके इस तमाचे का बदला वह अच्छी तरह लेगा

एक वारिसअली मिट गया, पर हजार वारिसअली ने जन्म ले लिया । एक पीरअली अपनी जान दे देगा, पर लाखों-लाख पीरअली जन्म लेंगे । गोरी सरकार जुबान की आवाज को मिटा सकती है, लेकिन दिल की आवाज नहीं मिटा सकती ।

टेलर —ह्वाट रोट यू टीक पीरअली ? हम एक मिनट में हिंदुस्तान का नक्शा बडलने सकटा । टुम हमारा ब्रिटैनिया का नाम नहीं जानटा । ब्रिटैनिया कन्ट्रोल्स द ओसंस । हम समन्डर पर राज करटा । जमीन किस गिनटी में हय ?

पीरअली--खून के गारे पर सल्तनत की दीवार नहीं टिकती साहब ।

टेलर —टुम कुछ नहीं जानटा । गोरा सरकार टुमारा किटना भलाई किया—टुम जानने सकटा ?

पीरअली--मैं सब कुछ जानता हूँ । गोरी सरकार ने हिन्दुस्तान की भलाई की या बुराई.....अगर आपको यह जानना हो, तो आज हिंदुस्तानियों के चेहरे की ओर गौर कीजिये, जहाँ गुर्बत और बीमारी अपना असर जमाये हुए है । फसलें होती हैं और गोरे मालिकों के बच्चे खाते हैं—जबर्दस्ती छीनकर खाते हैं । हमारी पुरानी सभ्यता अंगरेजी जुबान में जा छिपी । हम हर तरह से रौंदे गये । लेकिन साहब । अब यह नादिरशाही—यह जुल्म नहीं चल सकेगा । हम लड़ेंगे—तब तक लड़ेंगे, जब तक खून का आखिरी कतरा हमारे बदन में रहेगा ।

टेलर —पीरअली, आइ एप्रेशियेट योर वेल—योर इन्सपायरिंग एक्टिविटी टुवार्डस द एटेनमेंट औफ नैशनल फ्रीडम । बट आइ विल क्रश यू आल । हम एक बाट जानने माँगटा । एक्साइज आफिसर मि० लायल को कौन मारा ?

पीरअली--मि० लायल को हिन्दुस्तान की उस रूह ने मारा, जिसे उसने गाली दी । गोरा अंगरेज मि० लायल अकेला ही हमलोगों की

भीड़ में घुसकर हंटर चलाने लगा, गाली भी देने लगा। इसी कसूर में वह मारा गया। उसकी लाश अब तक पटना की सड़क पर पड़ी हुई ब्रिटिश सल्तनत की खैरियत मना रही है।

टेलर —(सक्रोध) सो यू किल्ड मि० लायल। इट इज नौट पीरअली? टुम मि० लायल के खून का जिम्मेडार हय। एक अंगरेज का खून सौ हिन्दुस्तानी का खून लेगा।

पीरअली--और सौ हिन्दुस्तानी का खून हजारों-हजार गोरों का खून लेगा।

टेलर —(गरजकर) पीरअली।

पीरअली--मि० टेलर! गरीब पीरअली आपकी बड़ी-बड़ी भुरी आँखों से नहीं डरता। पीरअली सिर्फ खुदा से डरता है। अपने वतन के आँसू से डरता है। मुझे मालूम है कि ये दो बन्दूकधारी सिपाही आपके इशारे का इन्तजार कर रहे हैं और फौरन ही मुझे गोली मार देंगे। पीरअली इन टुकड़खोर कुत्तों की भी पर्वाह नहीं करता।

टेलर —पीरअली! क्या टुम अपना कुछ साथी का नाम बटाने सकटा? हम टुमको बिलकुल छोड़ डेगा।

पीरअली--अफसोस मि० टेलर! आप अबतक पीरअली को नहीं पहचान सके। आप मेरे साथियों के नाम मुझसे नहीं जान सकेंगे!

टेलर —टुमको बोलने होगा।

पीरअली--आप तो पटना के कमिश्नर टेलर हैं, हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग और इंगलिस्तान की महारानी विक्टोरिया भी आ जायें, तो उनलोगों को यही जवाब दूँगा।

टेलर —टुमको बोलने होगा पीरअली।

पीरअली--पीरअली की जुबान काटना आसान है, लेकिन, उसके साथियों के नाम निकलवाना नामुमकिन है।

टेलर —(एक सिपाही से) रामसिंह! हमारा हन्टर लाओ। मेक हेस्ट!

(एक सिपाही का अभिवादन करके जाना)

टेलर —यू स्टूपिड! हम टुमसे नाम जानकर रहेगा। हमारा हन्टर टुमारा जाना ले लेगा।

(हन्टर लेकर सिपाही का प्रवेश)

टेलर —(हन्टर अपने हाथ में लेकर) आई आस्क यू एगेन पीरअली, टेल मी देअर नेम्स। आई विल शूट देम डाउन ऐटवन्स। नाम बोलो।

पीरअली--अपने हन्टर से मदद लीजिये साहब। आप इस जन्म में मेरे उन दोस्तों के नाम हर्गिज न जान सकेंगे, जिन्होंने मादरे-हिन्द को आजाद करने का बीड़ा उठाया है।

टेलर —हा: हा: हा:! आजादी! फ्रीडम! यह है उसका कीमट।

(हन्टर से मारते हैं। पीरअली छटपटाते हैं।)

टेलर —(मारते हुए) बोलो! बोलो!

पीरअली--नहीं! नहीं!

(बदन कई जगहों पर फट जाता है। खून बहता है।)

टेलर —(थककर) यू सिल्ली डौग! रामसिंह! हम कल पीरअली को फाँसी पर लटकाना माँगटा—पटना का बीच सड़क पर अभी ले जाओ!

पीरअली--(अस्त-व्यस्त दशा में) जालिम, यह हिन्दुस्तानी खून है, बहकर मिटेगा नहीं। इस खून का बदला हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा तबतक लेगा, जबतक गोरों का आखिरी कदम इस देश से नहीं हटेगा। यहाँ की मिट्टी में सोना है। उसका सौदा आपको काफी महगा पड़ेगा—ऐसा महँगा कि विक्टोरिया की पूरी सल्तनत बेचकर भी आप इसे खरीद नहीं सकेंगे। खरीद नहीं सकेंगे।

टेलर —(गरज कर) ले जाओ। ले आओ।

(दोनों सिपाही पीरअली को जैसे-तैसे ले जाते हैं।

(क्रोधावेश में टेलर का दूसरी ओर प्रस्थान)

द्वितीय दृश्य

[स्थान : जगदीशपुर बाबू कुँवर सिंह का दरबार। दरबार बड़े सुन्दर रूप में सजा है। सामने उच्चासन है। उस पर बाबू साहब कुछमुद्रा में आसीन हैं। दोनों तरफ दरबारी हैं। प्रहरीगण नंगी तलवार कंधे पर लिये खड़े हैं। एक भृत्य चँवर हिला रहा है। दायें-बायें कुँवर सिंह के अनुज अमर सिंह और मन्त्री हरेकृष्ण बैठे हैं। कुँवर सिंह के हाथ में एक पत्र है।]

कुंवर —कौन लाया है यह पत्र ?

हरेकृष्ण—सरकार.....

कुंवर —हम पूछ रहे हैं शीघ्र बतलाइये।

हरेकृष्ण—कमिश्नर साहब का एक चपरासी इस पत्र को लेकर आया है। वह बाहर खड़ा है। आज्ञा हो, तो उसे उपस्थित करूँ।

कुंवर —कुछ जरूरत नहीं है। यह पत्र ही बहुत-कुछ कह रहा है। अफसोस है कि यह कागज का पत्र है, हाड़-माँस का आदमी नहीं। नहीं-नहीं हरेकृष्ण, चपरासी को मेरे सामने हाजिर मत कीजिये, वर्ना वह गरीब मुफ्त में मारा जायेगा।

हरेकृष्ण---सरकार उस पत्र में कौन-सी बात है ? कमिश्नर साहब तो आपके दोस्त हैं।

कुंवर —पहले मैं भी ऐसा समझता था। पर अब वह मेरे शत्रु हैं—घोर शत्रु।

हरेकृष्ण—आखिर क्यों ?

कुंवर —आपलोग जानते हैं कि मुझे कर्ज के २० लाख रुपये महाजनों को देने हैं। गोरी सरकार ने इस पत्र के जरिये मुझे नोटिस दी है कि कर्ज एक माह में चुक जाये, वर्ना सारी जमींदारी जब्त कर ली जायगी।

अमर —(तलवार खींचकर) इस तलवार की धार क्या चली गई ? हमारी जमींदारी से गोरी सरकार का क्या ताल्लुक ? अपने इलाके के खुद राजा हैं।

कुंवर —अवश्य ! हम कर्ज अभी नहीं तो बाद में जरूर चुका देंगे।

अमर —हम चुकायें या नहीं चुकायें-इसमें गोरी सरकार को क्या ?

हरेकृष्ण--लेकिन यह जमींदारी तो गोरी सल्तनत में ही है मालिक।

अमर —इसका माने यह नहीं कि हमारी जमींदारी छीन ली जाये, हमारे बाप-दादों की मिल्कियत लुट जाये, हमारी मूछें झुका दी जायें। हम यह कभी नहीं बर्दास्त करेंगे। दादाजी आपने ही इन गोरों को इतना बल दिया है। क्या आप भूल रहे हैं कि वह आरा जहाँ कलक्टर की कोठी है—हमारी जमींदारी में पड़ता है ?

हरेकृष्ण—आपका कहना ठीक है छोटे सरकार। पर गोरी सरकार का बात क्या उठ जायगी ?

अमर —जरूर उठ जायगी। हम अपना खून देंगे, पर अपनी जमींदारी नहीं देंगे।

कुंवर —तुमने ठीक कहा अमर—हम अपना खून देंगे, अपनी जमींदारी नहीं।

हरेकृष्ण—तो पत्र का उत्तर ?

कुंवर —पत्र का उत्तर पत्र से नहीं जायगा। हम खुद कमिश्नर टेलर से एक भेंट करना चाहते हैं।

अमर —नहीं दादाजी, ऐसा हर्गिज न करें। गोरे बड़े दगाबाज हैं। वहाँ जाने से खतरे का सामना करना होगा।

कुंवर —हम राजपूत है अमर, और राजपूत खतरे से ही खेलते हैं। हिम्मत खोने से काम बिगड़ेगा। हम कमिश्नर से जरूर मिलेंगे।

अमर —आखिर क्यों ?

कुंवर —हम एकबार गौरांग मि० टेलर से आँखें मिलाने को कहेंगे। हम जानते हैं कि टेलर मेरे अहसानमन्द हैं। जब-जब ब्रिटिश सल्तनत के पाए इस इलाके में डगमगाये, यह कुंवर सिंह ही उनकी मदद करते रहे। आज हमें उनसे भीख नहीं माँगना हैं। पूछना है कि क्या गोरी सरकार की यह नीति न्यायपूर्ण है ?

अमर —मैं गोरों का विश्वास नहीं करता। मैंने आज ही नहीं, पहले भी हर बार कहा है कि ये गोरे पक्के धूर्त्त और बेईमान है। न्याय करना भला ये क्या जानें ? अगर न्याय इनकी नीति होती, तो ये सौदागर से आज शासक हो जाते ?

कुंवर —मन्त्री हरेकृष्ण सिंह, आप क्या कहते है ?

हरेकृष्ण —सरकार मैं पुराना आदमी हूँ। छोटे सरकार की तरह मैं तड़पना नहीं जानता। हम तो आपकी भलाई की बातें करेंगे। आपका जाना अच्छा रहेगा।

कुंवर —हम तुम्हारी राय की इज्जत करते हैं। हम खुद कमिश्नर से मिलेंगे। कमिश्नर का दूत हमारे साथ ही पटने चलेगा। हम कल ही यहाँ से जायेंगे। हमारी यात्रा का प्रबन्ध किया जाय। अब आपलोग जा सकते हैं।

तृतीय दृश्य

स्थान : मि० टेलर का पूर्व कथित आफिस।

[मि० टेलर क्रोधावेश में टहल रहे है। एक सैनिक खड़ा है।]

टेलर —ह्वाट ? आई कान्ट बिलीव कैप्टन लायड इज नौट ए फूल। डीनापुर का पल्टन बगावट किया? अपना कैप्टन पर बन्दूक चलाया? ओ माई गौड ! बैरकपुर और मेरठ का रोग यहाँ भी आ गया ? हमारा मिलिटरी हमारा डुस्मन ? स्ट्रेन्ज ! सिपाही ! हम यकीन नहीं करटा। डीनापुर का सिपाही बड़ा ईमानडार हय। फिर यह गोलमाल किस माफिक ?

सैनिक —हुजूर, मैं ठीक कह रहा हूं। कप्तान लायड ने दानापुर की पल्टन के सिपाहियों को बन्दूक जमीन पर डाल देने का हुक्म दिया। इस पर सभी हिन्दुस्तानी सिपाही बिगड़ गये और बन्दूक गोरे साहबों पर तान दिया।

टेलर —(साश्चर्य) इज इट ?

सैनिक —कप्तान साहब भाग गये और गोरे सिपाहियों को मुकाबला करने के लिए भेजा बन्दूके चलने लगी और काफी लोग मारे गये। मैं यही खबर देने के लिए आया हूँ।

टेलर —(दाँत पीसकर) ओल्ड कैप्टन लायड ! यू डिजर्व ए ब्रिटिश बुलेट फौर योर अनग्रेटफुल सर्विस टू दि नेशन। टुम जाओ ! हमसे फिर मिलना होगा। (सैनिक का जाना)

टेलर —इट इज ए क्रिटिकल मोमेन्ट फोर दि इंगलिश ! बट बी विल फेस इट टू दि लास्ट। इस आफट का मुकाबिला करना होगा।

(नेपथ्य में पग-ध्वनि)

टेलर —(लक्ष्य करते हुए) हू इज देयर ! कौन हय ? (फिर पगध्वनि) टेल मी, हू इज देयर ?—स्टौप और शूट।

(सैनिक का पुनः प्रवेश। सलाम करना)

सैनिक —बाबू कुँवर सिंह हजूर से भेंट करना चाहते हैं।

टेलर —बाबू कुँवर सिंह ! ओ, कुँवरसिंह आँफ जगडीशपुर ! गुड ! भेजो।

(सैनिक का प्रस्थान; कुँवरसिंह का प्रवेश)

टेलर —हलो ओल्ड फ्रैन्ड। गुड मौर्निंग !

कुंवर —नमस्ते। हम साहब बहादुर से मिलकर बहुत खुश हुए।

टेलर —मेरा अच्छा नसीब ! टेक योर सीट प्लीज !

(कुँवर सिंह बैठते हैं। टेलर भी बैठते हैं।)

कुंवर —साहब, आपने मेरे पास एक पत्र भेजा है। मैं उसी के सम्बन्ध में आपसे मिलने आया हूँ।

टेलर —ओ ! आई रिमेम्बर। माफ कीजिये मि० कुँवर सिंह, वह हम प्रेसर में पड़कर किया हय। आप बहुट लोग से कूरजा लिया। वह सब अपील किया। बीस लाख कर्ज ! मिजेज क्राइस्ट ! बोर्ड आँफ डायरेक्टर्स का हुक्म है कि आपका स्टेट जब्त करना होगा। हम लाचार। हम जानटा कि आप हमको बोलेगा। लेकिन हम आपका फ्रेन्ड, हम आपके खिलाफ कभी जानेवाला नहीं। लेकिन मामला बहुत डूर चला गया।

कुंवर —कमिश्नर साहब, आप जानते हैं कि मैं शुरू से आपका मित्र रहा। गोरी सरकार को हर तरह से मदद करता रहा। आज मेरी मुसीबत में आपका और गोरी सरकार का भी कुछ कर्त्तव्य मेरे प्रति है। मुझे कुछ अधिक समय मिले कि इन कर्जों को मैं चुकाने का प्रबन्ध कर सकूँ।

टेलर —होपलेस। ईस्ट इन्डिया कम्पनी इसको नहीं मान सकेगा।

कुंवर —साहब जरूर मानेगी। इस समय भारत की छाती पर चारों ओर विद्रोह हो रहा है। सभी लोग गोरी सरकार के दुश्मन हो रहे हैं। हम आपके दोस्त बनकर रहेंगे। इसमें भला आप की सरकार को फायदा है या नुकसान ? आप ही सोचें।

टेलर —वन थिंग-यू हेल्प दि ब्रिटिश गवर्नमेंट नाऊ, ऐण्ड आइ बिल रिकोमेन्ड योर केस स्ट्रोंगली। आप गोरी सरकार को अभी—बिलकुल अभी—मडड करेगा, टो हम ऊपर जरूर लिखेगा।

कुंवर —इस समय हम कैसी मदद कर सकते है। आप ही बतायें।

टेलर —डीनापुर का हिन्डुस्टानी सिपाही बागी हो गया। आप जाकर उसको समझायेगा और ठीक करेगा। आपका बाट वह लोग नहीं उठाने सकेगा।

कुंवर —यह एक जिम्मेदारी का काम है साहब। शाहाबाद जिले के सभी सिपाही मेरा हुक्म मान जायेंगे, पर और जिलों का जिम्मा मैं नहीं लेता। दूसरी बात यह है कि अगर सिपाही काम पर लौट भी आये, तो उनके सभी कसूर आपको माफ करने होंगे।

टेलर —नो-नो-नो ! इम्पौसिबिल ! दे विल बी पुट टू कोर्टमार्शल (ताव) सबका विचार फौजी अदालत में होगा। कोई नहीं बचेगा। सबको गोली मारा जायगा। दे विल बी पुट टू डेथ।

कुंवर —तो फिर हमें माफ कीजिए। मैं काम पर लौटा कर उन्हें मरते नहीं देख सकूँगा।

टेलर —मि० कुँवर सिंह, इस काम पर ही आपका जमींडारी टिकने सकेगा।

कुंवर —अब मुझे कहना पड़ा मि० टेलर। हम हिन्दुस्तानी हैं। सामने लड़कर दुश्मन की छाती में कटार भोंकते हैं, धोखा देकर पीठ में कटार नहीं भोंकते। हम उन गरीबों की जान, धोखे में डालकर, लेने के पक्ष में नहीं हैं।

टेलर —सो इट इज क्लियर—यू हेल्प देम। हम जानटा—आप बागी सिपाही को मडड करटा।

कुंवर —हर्गिज नहीं। मैंने अबतक उनकी कुछ भी मदद नहीं की है। लेकिन आपकी बातों से मेरा इरादा होता है कि अब एकबार गोरी सरकार से भिड़कर ही फैसला कर लें कि इस जमीन का असली मालिक कौन है।

टेलर —मि० कुँवरसिंह!

कुंवर —मिस्टर नहीं, बाबू कुँवर सिंह कहिये। हम हिन्दुस्तानी हैं।—और हिन्दुस्तानी सम्मान के शब्द ही हमें अच्छे लगते हैं।

टेलर —शट अप यू ओल्ड मैन।

कुंवर —रंज होने की जरूरत नहीं है। आपके पास बन्दूकें हैं, तोपें हैं। लेकिन, हमारी तलवार की धार भी अभी तेज है। आप जवान हैं, लेकिन ८० वर्ष की इन बूढ़ी हड्डियों की ताकत अभी भी नयी है। हम जाते हैं--रण का निमन्त्रण देकर। अच्छा नमस्ते।

(शीघ्र प्रस्थान)

टेलर —(चीखकर) सेन्ट्री! अरेस्ट दैट ओल्ड मैन कुँवर सिंह। रन अप। जल्दी।

(जाना)

चतुर्थ दृश्य

[स्थान : जगदीशपुर। बाग में मन्दिर। मन्दिर में शिवमूर्त्ति है। एक ऊँचे चबूतरे पर कुँवर सिंह खड़े हैं। नीचे अमर सिंह और हरेकृष्ण सिंह सशस्त्र खड़े हैं। सामने एक ओर दानापुर का विद्रोही सैनिक रणजीत भी खड़ा है।]

कुंवर —रणजीत सिंह, हम दानापुर के सिपाहियों की बगावत का हाल सुन चुके हैं। आगे की बात कहो।

रणजीत--महाराज, मैं भी दानापुर की पल्टन का एक सैनिक हूं। वहाँ गोरे सिपाहियों की सन्देहात्मक नीति से हिन्दुस्तानी सिपाही ऊब उठे थे। एक दिन परेड के बीच जब कप्तान लायड ने हमारी बन्दूकें वापस करने का आदेश दिया, तो हम सब समझ गये कि हमें ये लोग कुत्ते की मौत मारना चाहते हैं। हमलोग भी तन गये। गोरे सैनिकों से जमकर युद्ध किया। हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने अपनी रक्षा के हेतु सोन नदी की ओर बढ़ना शुरू किया। तत्पश्चात हमें उनलोगों ने मदद लेने के लिए आपके पास भेजा। वे सब भी इधर ही आ रहे हैं। यही हमारी राम-कहानी है।

कुंवर —रणजीत, समझ में नहीं आता कि हम कैसे तुमलोगों की मदद कर सकते है। हमारे पास इस समय धन नहीं है सेना नहीं है, बन्दूकें नहीं है। फिर हम कैसे कुछ करेंगे?

रणजीत--महाराज, हस भारतभूमि की आजादी के लिए युद्ध करेंगे। हमें तनखाह नहीं चाहिए। सेना के लिए हम काफी हिन्दुस्तानी सिपाही देंगे, जो मरेंगे पर पीछे नहीं हटेंगे। आप हथियारों के लिए भी चिन्ता न करें। ब्रिटिश सरकार को दी गई बन्दूकें अब तक हमलोगों के पास हैं। उन्हीं से हम लड़ेंगे। सबसे बड़ी समस्या है, हमारे सामने एक योग्य सेनापति होने की। अगर आप सैन्य-सँचालन करें, तो हम अवश्य विजयी होंगे।

कुंवर —तुम नहीं जानते रणजीत। हमने सामरिक शिक्षा तुमलोगों की तरह नहीं पाई है। गोरी सरकार के विरुद्ध खड़ा होना हँसी-खेल नहीं है।

अमर —तो फिर आपने मि० टेलर को रण का निमन्त्रण क्यों दिया ? शेर की ताकत का अगर पहले से ज्ञान था, तो उसे ललकारा क्यों ?

हरेकृष्ण--बात तो सुलझानी थी, पर वह और उलझ गई।

रणजीत--महाराज सोचने का समय नहीं है। आप में क्या हैं—यह सम्भव है, आप नहीं जानते हों, पर हम सब जानते हैं। तभी तो सारी बाधाओं को अपने पैरों से मसलते, भयानक नदियों को पार करते, जंगली पशुओं से युद्ध करते, हम आपके सामने हाजिर हुए हैं। यह बड़ा सुन्दर मौका है महाराज। भारत में गोरों के विरुद्ध खुल कर लड़ाई हो रही है। बैरकपुर, मेरठ, लखनऊ, कानपुर, दिल्ली, झाँसी—हर जगह बगावत हो रही है। दिल्ली के मुगल बादशाह बहादुरशाह, कानपुर के नानासाहब, कालपी के रावसाहब, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और लोहे के बने हुए महावीर तात्या टोपे इस जंग के नेता हैं। क्या हमारा बिहार प्रान्त इस आजादी की लड़ाई में पीछे रहेगा ? क्या शेर कुंवर सिंह की गढ़ी जगदीशपुर का नाम गुल हो जायगा ?

अमर —हर्गिज नहीं। बिहार भी इस आजादी की लड़ाई में आगे आयेगा। और दादाजी, आपको ही यहाँ का सेनापति बनना पड़ेगा।

कुंवर —अमर सिंह, तुम मुझसे छोटे हो। तुममें जवानी शेष है। मैं ८० वर्ष का बूढ़ा हूँ। मुझसे यह कड़ी लड़ाई नहीं हो सकेगी।

अमर —दादाजी, शेर अपनी जिन्दगी के अन्तिम क्षण तक शेर ही रहता है। कौन कहता है आप वृद्ध है ? पदवी के लिए उम्र नहीं, हिम्मत चाहिए, और वह हिम्मत आप में है। अगर आपको लोग वृद्ध समझते, तो आज आपके नाम से जालिम डाकू नहीं डरते, लोग सिर नवाकर नहीं चलते, आरा के कलक्टर और

पटने के कमिश्नर आपको दावत नहीं देते। लेकिन कुंवरसिंह का व्यक्तित्व सब पर छाया है। आपको सैन्य-संचालन करना ही होगा।

कुंवर —मन्त्री हरेकृष्ण, आप क्या सोच रहे हैं ?

हरेकृष्ण--मैं सोच रहा हूँ कि होनेवाली लड़ाई में मुझे क्या करना पड़ेगा।

कुंवर —क्या आप हमसे जुदा हैं, हरेकृष्ण जी ? हमारे साथ ही तो आप आज तक रहते आये हैं और आगे भी रहेंगे।

हरेकृष्ण—सरकार ठीक कहते हैं। पर लड़ाई झगड़ा अच्छा नहीं है।

अमर —लेकिन नहीं लड़ने पर भी तो कल्याण नहीं है, मन्त्री जी।

हरेकृष्ण--क्यों ?

अमर —मि० टेलर का विश्वास अब हमलोगों पर उठ गया है। वह मामला अवश्य बढ़ायेंगे। ऐसी दशा में कुछ करके ही दिखाना उचित होगा ?

कुंवर —तुमलोगों ने काफी बहस किया। अमर सिंह, तुम क्या सचमुच यह चाहते हो कि हम इस विद्रोहाग्नि में कूद पड़ें ?

अमर —यह विद्रोह नहीं है दादाजी, यह आजादी का युद्ध है। जब सारा भारत इन गोरों से लोहा लेने को तैयार है, अपनी खोई हुई आजादी की प्राप्ति के लिए सचेष्ट है, तो हम क्यों चुप रहें ? यह समय का तकाजा है, देश की पुकार है, हम जुल्म के विरुद्ध लड़ेंगे। भारत का मस्तक हिमगिरि हिमालय हमें अपने देश की सुषमा का ध्यान दिला रहा है। भारत की हरी-भरी धरती हमसे अपनी रक्षा की भीख माँग रही है। दक्षिण का महासमुद्र अपने गम्भीर घोष से हमें आशीर्वाद दे रहा है। समय हमारे अनुकूल है। हम लड़कर अवश्य विजयी होंगे। यह

हमारी जमींदारी का प्रश्न नहीं है, बल्कि लाखों-लाख भूखी-नंगी जनता के जीवन-मरण का प्रश्न है।

कुंवर —तुम्हारे शब्दों में जादू है अमर। हमने भी सोचकर देखा है, युद्ध अवश्यम्भावी है रणजीत !

रणजीत—आज्ञा महाराज।

कुंवर —हम सेनापति बनेंगे, पर एक शर्त्त।

रणजीत—कौन-सी है वह शर्त्त।

कुंवर —इस महाकाल की प्रतिमा के सम्मुख अपना रक्त देकर तलवार का स्पर्श कर, सबों को कसम खानी होगी कि हम आखिरी दम तक लड़ेंगे, आजादी प्राप्त करेंगे या प्राणों की बलि देंगे। बोलो, तैयार हो ?

अमर —हम तैयार है।

रणजीत—मैं भी तैयार हूँ। हमारा हर एक साथी तैयार होगा।

कुंवर —और मन्त्रीजी ?

हरेकृष्ण—मैं भी तो इस देश का निवासी हूँ। आजादा मुझे भी प्रिय है। मैं भी तैयार हूँ।

कुंवर —तो जाओ इत प्रलयंकर शंकर की मूर्त्ति के सामने। पहले हम चार ही इस महाव्रत में दीक्षित हो लें। (मूर्त्ति से) भगवान शंकर ! हमें शक्ति दो। हम प्रलय की सृष्टि करना चाहते हैं। तुम्हारे डमरू की ताल पर नाचना चाहते हैं। भारत-भूमि का उद्धार करना चाहते हैं। अन्याय का अन्धकार मिटाकर न्याय का प्रकाश लाना चाहते हैं। जिस महाशक्ति के द्वारा तुमने महिषासुर का वध किया, चण्ड-मुण्ड का अन्त किया, रक्तबीज का नाश किया, शुम्भ-निशुम्भ को पीस डाला, वही शक्ति मुझमें भी भर दो देव ! इस पुण्य कार्य में तुम्हारे ही बल पर मैं हाथ

लगा रहा हूँ। हमारी नसों में गर्म खून की धारा प्रवाहित कर दो। हमारे कलेजे में बिजली भर दो। हमारी साँस में तूफान का बल डाल दो। हमारी आँखों में अपने तृतीय नेत्र की ज्वाला भर दो। भगवन् ! यह लो, हमारा लाल रुधिर तुम्हारी भेंट है। स्वीकार करो देव !

(तलवार से तर्जनी को चीरते हैं। रक्त पृथ्वी पर गिरता है। अन्य तीन व्यक्ति जो अब तक भक्ति-भाव से खड़े थे, अब अपनी-अपनी तलवार से उसी रूप में रक्त भेंट करते हैं।)

कुंवर —अमर सिंह, रणजीत और हरेकृष्ण सिंह, सुन लो और जान लो—आज से, इसी क्षण से, हम गोरों के विरुद्ध रण की घोषणा करते हैं। रणजीत ! सेनापति का आदेश है—पहले आरा की कलक्टरी पर कब्जा कर लो।

रणजीत---यह हमारे सेनापति का प्रथम आदेश है। हम सिर झुकाते है। अभी आरा की ओर प्रस्थान करते है।

कुंवर —एक बार बोलो—जय भारत !

सब —जय भारत !

अमर —सेनापति कुंवर सिंह की जय।

सब —सेनापति कुंवर सिंह की जय।

(सब तलवारें ऊँची करके जयनाद करते हैं।)

पंचम दृश्य

[स्थान : जगदीशपुर के पास का जंगल। अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित, जंगी लिबास में, कुंवर सिंह का प्रवेश।]

कुंवर —अंगरेजों के साथ का मुकाबला तो बड़ा जबर्दस्त रहा। हमने आरा पर कब्जा कर लिया। गांगी के युद्ध में कप्तान डनवा अपने सिपाहियों के साथ मारा गया। पर इसी बीच मेजर आयर ने आकर मेरा सारा किया कराया नष्ट कर दिया। बीबीगंज की लड़ाई में मेरी सेना हार गयी। आरा फि अंगरेजों के कब्जे में चला गया। तो क्या अब मैं बैठ जाऊँगा नहीं, ऐसा नहीं होगा। यह युद्ध अभी चलेगा। जबतक शरी में प्राण है, नसों में गर्म खून है, मस्तिष्क में सोचने की शक्ति है—तबतक हम लड़ेंगे। लो, मन्त्री हरेकृष्ण सिंह भी आ गये।

हरेकृष्ण—(प्रवेश अभिवादन) बड़ी भयंकर खबर लाया हूँ, महाराज !

कुंवर —भयंकर खबर से घबराया नहीं करते मन्त्रीजी। हम तो मरने मारने के लिए तैयार बैठे हैं, फिर भयंकर खबर से डरें क्यों ? बताइये, क्या खबर है ?

हरेकृष्ण—अंगरेज सेनापति मेजर आयर बीबीगंज के युद्ध में विजयी हुआ।

कुंवर —(हँसकर) तो इसमें बुरा क्या हुआ ?

हरेकृष्ण—आरा-हाउस पर दुश्मनों ने अधिकार कर लिया।

कुंवर —यह तो पुरानी खबर है मन्त्री जी।

हरेकृष्ण—मेजर आयर विजयोन्माद में उन्मत्त होकर, राह के निवासियों को काटता हुआ, बिजली की चाल से, जगदीशपुर की ओर आ रहा है।

कुंवर —(एकाएक आकृति में परिवर्त्तन) क्या कहा ? मेजर आयर इधर आ रहा है ? कितनी दूर है दुश्मन की सेना ?

हरेकृष्ण—बहुत निकट। अब वे लोग निकट पहुँचनेवाले हैं। फौरन ही हमें कुछ करना चाहिए।

कुंवर —यह आयर तो बड़ा तेज गोरा निकला। कोई दूसरा सेनापति इतनी हिम्मत नहीं करता। जगदीशपुर पर आक्रमण करना दुस्साहस है मन्त्री जी। हम दुश्मनों से लड़ेंगे।

हरेकृष्ण—लेकिन हमारे सिपाही तो इधर-उधर हो गये हैं।

कुंवर —सिपाहियों के लिए फिक्र मत कीजिए। जगदीशपुर और उसके आस-पास के लोगों को सूचना दे दीजिए कि वे सब लड़ने को तैयार रहें। आप जाइये।

हरेकृष्ण—और आप ?

कुंवर —अमर सिंह दिलीपपुर गया है। मैं उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आप देर न करें। फौरन जायें।

(हरेकृष्ण का जाना)

कुंवर —भगवान शंकर। यह कैसा वज्रपात ? हम क्या करें ? बीबीगंज-युद्ध के बाद मेरी सेना छिन्न-भिन्न हो गयी है। नूतन सेना का संगठन करना होगा। इधर शत्रु सिर पर हैं। (घोड़े की टापों की ध्वनि) कौन ? आ गया मेरा भाई। घोड़े को एक पेड़ से बाँधकर इधर ही दौड़ा आ रहा है। अमर ! अमर !!

(अमरसिंह का प्रवेश, चरण छूकर अभिवादन)

अमर —आपने सुना कुछ दादा ? मेजर आयर जगदीशपुर में घुस चुका है।

कुंवर —क्या ? जगदीशपुर में घुस चुका ?

(नेपथ्य में बन्दूकों की आवाज

अमर —सुनिए बन्दूकों की आवाज ! गोरे इन देहातियों पर गोली चल रहे हैं। आप एक काम करें। फौरन महल में जाकर औरतें और बच्चों को किसी तरह बाहर निकालकर सुरक्षित स्थान में पहुँचा दें। ये गोरे औरतों पर अत्याचार करेंगे। आप उनकी रक्षा का भार स्वयं लें।

कुंवर —और·····और तुम अमर ?

अमर —मैं लड़ने के लिए तैयार होकर आया हूँ। मेरे साथ कुछ सैनिक भी हैं। हम आगे बढ़कर गोरों से मोर्चा लेंगे। उन्हें तबतक रोके रहेंगे, जबतक आप सब जगदीशपुर से बाहर न निकल जायें। गोरे हमारी लाश पर पैर रखकर भले ही आगे बढ़ें, पर ऐसे नहीं। आप सोचें नहीं। इस समय की यही रणनीति है। गोरी सेना के साथ तोपें है, और काफी सैनिक भी हैं। अभी पीछे हटना ही हमारे लिए उत्तम है। हमारा घोड़ा तैयार है। हम जाते है। आप भी जाइये।

कुंवर —अमर, रणजीत कहाँ है ?

अमर —वही हमारी छोटी-सी सेना को संभाल रहा है। हमें अब जाना चाहिए। वह देखिए, गोरे लोग आग लगा रहे हैं। सामने का घर जल रहा है।

(पुन : बन्दूकों की आवाज, दूर में आग का दृश्य, भगदड़ और क्रन्दन-ध्वनि।)

कुंवर —शत्रु नजदीक आ गये।

अमर —आप जायें दादा जी। जीवन रहा तो हम फिर मिलेंगे, अन्यथा दो भाइयों का यह अन्तिम मिलन है।

कुंवर —(अमर को कलेजे से लगाकर) यह मौत भी साधारण नहीं होगी भाई। हम जननी-जन्मभूमि के लिए शहीद होंगे। वृद्ध है। अच्छा होगा, एक पुण्य कार्य में जान चली जाये। अरे, वह देखो—आयर और टेलर इधर ही आ रहे हैं। अब हटना ही उचित है।

अमर —विलम्ब मत कीजिए दादा ! फौरन जाइये और एक बात, अगर गोरों से आप कुल-ललनाओं की रक्षा नहीं कर सके, तो अपने हाथों से उनका वध कर दें, ताकि गोरे उनकी लाज पर हाथ न डाल सकें। अच्छा प्रणाम।

(चरण छूकर प्रस्थान)

कुंवर —हम प्रलय से युद्ध करेंगे। गोरी सरकार कौन-सी चीज है ? अगर हम जीवित रह गये तो गोरों के इस जुल्म का बदला अच्छी तरह लेंगे।

(शीघ्र प्रस्थान। दूसरी ओर से आवेश में मेजर आयर और मि० टेलर का प्रवेश। हाथ में पिस्तौल और कमर में लम्बी तलवार। जंगी वेश।)

आयर —(इधर-उधर देखकर) ह्वेअर इज दैट ओल्ड लायन ? ही वाज हियर। इज इट नौट मि० टेलर ?

टेलर —आफ कोर्स। ही माहट बी इन दिस जंगल सम्ह्वेयर।

आयर—मि० टेलर, आई वाज प्रोसीडिंग टू एलाहाबाड टू सी हिज एक्सेलेन्सी दि गवर्नर-जनरल आफ इन्डिया। हम एलाहाबाड लार्ड कैनिंग के पास जाटा था। आप हमको मुश्किल आसान करना मागटा। आइ नी हाउ टु क्रश दीज रिबेल्स। हम जगडीशपुर को तोप से उड़ा डेगा। इस जंगल मे आग लगा डेगा। यहाँ सब लोग पर जुलुम करेगा।

टेलर —दैट्स गुड मेजर आयर। आइ नीड ए मैन लाइक यू ऐट दिस मोमेन्ट। आप से होने सकेगा। लेकिन, ओल्ड कुँवर सिंह को पकड़ना सबसे पहला काम। पुट दि ओल्ड लायन इन दि प्रिजून, देन एवरीथिंग इज ओ० के०।

आयर —(दूरी पर नजर डालते हुए) वेल मि० टेलर। हू इज देअर?

टेलर —(देखकर) ओ यस! गुड फौरचुन मेजर! ही इज प्रिन्स अमरसिंह।

आयर —प्रिन्स अमर सिंह?

टेलर —यस, अमर सिंह—ब्रदर आफ कुँवर सिंह एण्ड जमीन्डार आफ दिलीपपुर। ही इज आलसो डेन्जरस। अमर भी बहुत खटरनाक आडमी। किल हिम हियर।

(आवेश में अमर सिंह का पुनः प्रवेश)

अमर —मि० टेलर, हम जानना चाहते हैं कि हमारी जमींदारी में इस तरह अत्याचार करने का अधिकार आपको किसने दिया? क्यों इन बेकसूरों के घरों में आग लगायी जा रही है? क्यों औरतों और बच्चों पर जुल्म किये जा रहे हैं? क्यों हमारी इज्जत लुटी जा रही है? क्या यही गोरों का इन्साफ है? क्या इसी के लिए आप पटने के कमिश्नर बनाये गये हैं?

टेलर —अमर सिंह! हम तुमारा सामने कैफियट नहीं डेने सकटा। हम गोरा सरकार का ओफिसर। तुम सरकार को चैलेन्ज किया, बगावट किया। हम बगावट डबाने के वासटे यह जुलुम किया। सब बखेड़ा का जड़ हय तुमारा भाई—दैट कुँवर सिंह।

आयर —हम कुँवर सिंह को पकड़ना मांगटा। उसको फांसी पर चड़ाना मांगटा। क्या तुम मडड करने सकटा, प्रिन्स अमर सिंह?

अमर —क्या इसी नीति को लेकर आपलोग भारत जैसे महान् देश पर शासन करना चाहते हैं? मि० आयर, आप तो ब्रिटिश ना-

पति हैं ऐसी तुच्छ बातें आपके मुह से अच्छी नहीं लगतीं। आप वीर है। कुँवर सिंह की वीरता कम-से-कम आपको तो माननी ही चाहिये।

आयर —आइ रियेली प्रेज हिज ऐक्शन अमर सिंह। बट आइ ऐम सौरी, उसको गोरा सरकार को मडड करना था; लड़ना नहीं।

अमर —आप सही फमति हैं। पर उन्हें मजबूर किया गया कि वे गोरी सरकार के खिलाफ खड़े हों। मि० टेलर ने अपने अत्याचार से सबको गोरी सरकार का शत्रु बना लिया। हम हिन्दुस्तानी हैं, और हिन्दुस्तानी जान से ज्यादा मान को इज्जत देते हैं। हमें वैसा भोजन दिया गया कि हम कै करें, हमारे खून में वह बिजली भरी गई कि हमारे प्राण के तार बज उठे। हम नींद में पड़े थे, हमें तमाचे मार-मार कर जगाया गया। हम भूल गये थे कि हम महाराणा प्रताप और शिवाजी के वंशज हैं; हमें इस बात की भी याद दिलायी गयी कि हम जुल्म से टक्कर लें।

टेलर —शट अप अमर सिंह। डोउट एनी मोर। हम आज तुमारा जगडीशपुर जलाकर राख कर डेगा और तुमको भी अभी मरना होगा।

अमर —अमर सिंह मौत से नहीं डरते मि० टेलर। अमर सिंह मर कर अमर होंगे। लेकिन अमर सिंह को मारनेवाले के कलेजे में फौलाद की ताकत होनी चाहिए। अगर आप सचमुच बहादुर हैं, तो पिस्तौल से काम न लेकर तलवार पकड़े, सामने आकर युद्ध करें। हम आपको कसम देते हैं। आइये सामने।

आयर —वेल अमर सिंह, हम सोर्ड चलाना जानटा। हमसे लड़ो।

टेलर —नो नो मेजर। लेट मी फाइट विथ दिस फेलो। अमर सिंह, तुम अंगरेजी सोर्ड का धार नहीं डेखा। आज डेखा।

(वार करते हैं; अमर बचाते हैं।)

अमर —अब हिन्दुस्तानी तलवार की हिम्मत देखिये मि० टेलर ।

(अमर का वार टेलर बचाते हैं ।)

आयर —वेरी नाइस ! वेरी नाइस ! अमर सिंह, अब हमारा साथ । मि० टेलर, लीव हिम ।

(अब अमर और आयर तलवार से युद्ध करते हैं । टेलर पिस्तौल चलाते हैं । वार चुक जाता है । आवाज सुनकर आयर युद्ध बन्द करके टेलर के पास आते हैं ।)

आयर —डोन्ट शूट हिम मि० टेलर । अमर सिंह, टुम बहादुर । हम टुमारा जान अभी ले सकटा हय । लेकिन नहीं, हमारा कलेजा पत्थर का होकर भी बहादुर का इज्जट करटा । हम कुँवर सिंह को डेखना माँगटा । हिन्दुस्तानी बहादुर, टुम भाई को भेज डो ।

अमर —कुँवर सिंह जगदीशपुर से बाहर चले गये । वे अब रणभूमि में ही मिलेंगे । हमने आपलोगों को फँसाकर अपना कर्त्तव्य कर लिया । अब हम जाते हैं । अच्छा नमस्ते !

(शीघ्र प्रस्थान, आयर और टेलर एक-दूसरे को देखते हैं ।)

पटाक्षेप

द्वितीयांक

प्रथम दृश्य

[स्थान—हरेकृष्ण सिंह का निवासस्थान । हरेकृष्ण सिंह की विधवा कन्या माया टहल-टहल कर गा रही है ।]

॥ गाना ॥

जीवन की नाव मझधार में रे।
बुझ गये लघु दीप हमारे,
छोटा-सा जीवन लुट गया रे ॥ जीवन०।
तूफानों से लड़ती हूँ मैं
विरहिन-सी रहती हूँ मैं,
इस दुनिया के एक किनारे ॥ जीवन० ॥

(आवेश में हरेकृष्ण का प्रवेश)

हरेकृष्ण—(घबराहट के स्वर में) माया ! माया !!

माया —कौन ? पिताजी ! आप घबराये क्यों हैं ?

हरेकृष्ण—गजब हो गया माया । हम लुट गये, जगदीशपुर श्मशान हो गया । गोरों ने सब कुछ नष्ट कर दिया ।

माया —ये गोरे कौन हैं, पिताजी ?

हरेकृष्ण—ये गोरे रावण के वंशज हैं । इनसे सारी पृथ्वी काँप रही है । ये लुटेरे हैं । जहाँ जाते हैं—आँधी और भूचाल लेकर जाते हैं, बीमारी और मौत लेकर जाते हैं ।

माया —तब तो ये सचमुच भयंकर हैं। लेकिन जगदीशपुर से इन लोगों की कौन-सी शत्रुता है, पिताजी ?

हरेकृष्ण—भोली लड़की ! कुछ नहीं जानती ! अरी पगली, कुँवर सिंह ने इन लोगों से झगड़ा मोल लिया है। इसी से ये सब भूखे शेर हो रहे हैं।

माया —अब समझी। शायद कुँवर सिंह रावण के इन वंशधरों को लंका भेजने को सोच रहे हैं। क्यों पिताजी ?

हरेकृष्ण—तुम ठीक समझती हो। लेकिन बाबू साहब की खोपड़ी खराब हो गयी है। यह और कुछ नहीं, बुढ़ापे का कसूर है।

माया —लेकिन अपने हक के लिए लड़ना तो बुरी बात नहीं है, पिताजी।

हरेकृष्ण—भाई बुरे-भले का ज्ञान मनुष्य को क्या, ईश्वर को भी नहीं है। इसीसे मैं ईश्वर के अस्तित्व में बिश्वास ही नहीं करता।

माया —यह कैसे पिताजी ?

हरेकृष्ण—अगर ईश्वर समझदार होता, तो तुम्हें इस उम्र में विधवा क्यों बनाता ? इस उम्र में मुझे विधवा कन्या देखने का दुर्भाग्य क्यों होता ? खैर, छोड़ो इन बातों को। मैं तुम्हारे पास एक जरूरी काम से आया हूँ लेकिन तुम्हारी बातों में मैं सब कुछ भूल बैठा।

माया —आप शायद बाबू साहब के पास जा रहे हैं।

हरेकृष्ण—बल्कि यों कहो, मैं भाग्य का दामन पकड़कर हवा में उड़ने जा रहा हूँ। बाहर घोर युद्ध हो रहा है। बाबू साहब अपने महल की अन्य औरतों के साथ जगदीशपुर के बाहर चले गये हैं। मैं भी जा रहा हूँ। तुम भी चलो।

माया —नहीं पिता जी, मैं नहीं जाऊँगी। मेरे प्राणों का इतना मूल्य नहीं है कि मैं उन्हें बचा कर रखूँ।

हरेकृष्ण---तुम समझती नहीं माया। इस विपत्ति से दूर हट जाना ही अभी उचित होगा।

माया —क्यों उचित होगा ? मेरे जीवन से क्या किसी का मंगल होगा ? फिर इसे संभालकर रखने से लाभ ? पिताजी आप मेरी चिन्ता न करें। मैं यहीं रहूँगी। मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।

हरेकृष्ण---मूर्ख ! सिर पर मौत नाच रही है। दुश्मन की गोली तुम्हारी बहस से नहीं रुकेगी। फिर तुम्हारी कोई रक्षा नहीं कर सकेगा।

माया —मेरी रक्षा ईश्वर करेगा।

हरेकृष्ण---ईश्वर ! ईश्वर !! तुम जानती हो माया कि मैं नास्तिक हूँ। मैं ईश्वर को नहीं मानता। फिर तुम मेरे सामने ईश्वर का नाम क्यों लेती हो ? (बाहर दरवाजा खटखटाने की आवाज)

माया —कोई द्वार खटखटा रहा है।

हरेकृष्ण---मत खोलो द्वार माया। जरूर दुश्मन होंगे।

माया —तो फिर भागने की क्या जरूरत है ? हम यहीं पर दो हाथ उनसे लड़ लें। कहाँ है आपकी तलवार ?

हरेकृष्ण---मैं फिर कहता हूँ। चलो, भाग चलें बेटी।

माया —नहीं पिताजी, बहुत विलम्ब हो गया। अब दुश्मन से भेंट कर ही लेनी होगा।

हरेकृष्ण---भाग्यहीन कन्या ! तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गई है। तुम स्वयं मरना चाहती हो; क्योंकि, तुम्हारे प्राण सस्ते हैं। पर हरेकृष्ण सिंह इतना मूर्ख नहीं है कि आसानी से अपनी जान दे दे। मरो तुम माया। मैं तो जाता हूँ। (जाना)

माया —पिता जी चले गये। मैं अकेली हूँ। कौन मेरी रक्षा करेगा ? हे भगवान् ! द्रौपदी की लाज बचानेवाले ! मेरी रक्षा करो प्रभो ! (फिर द्वार खटखटाने का ध्वनि)

माया —अच्छी बात है। राजपूत कन्या हूँ। आफत से डरती नहीं। दुश्मन से भेंट करनी होगी। द्वार खोल दूँ। देखूँ कि ये गोरे हैं कैसे ?

[जाकर द्वार खोलती है। द्वार खुलते मेजर आयर नजर आते हैं। वे अट्टहास करते हुए धीरे-धीरे माया की ओर बढ़ते हैं। माया भयभीत भाव से पीछे की ओर हटती जाती है, और अन्त में दीवार के सहारे असहाय भाव से खड़ी हो जाती है ! आयर माया का हाथ पकड़ना चाहते हैं।]

माया —(कड़ककर) खबरदार गोरे डाकू। इधर हाथ न बढ़ा।

आयर —(अट्टहास) पुअर लेडी। तुम इस घर में अकेला ?

माया —भाग्य की मार ने मेरे सुहाग को मुझसे छिन लिया और भय के मारे मेरे पिताजी भाग गये।

आयर —हम कुछ नहीं समझा। तुम क्या बोलटा ? क्या तुम अकेला हय ?

माया —जी हाँ, मैं अकेली हूँ।

आयर —तुम डरो मट। हम मेजर आयर—गोरा पल्टन का कमांडर। तुमको हमारा कैम्प में चलना होगा।

माया —आपके कैम्प में ! किसलिए ?

आयर —हम तुमको इज्जट डेगा। तुमको अपना साठ रखेगा।

माया —आप कृपाकर मेरे घर से बाहर चले जायें। इज्जत देकर इज्जत पाना शायद आपके देश की औरतें चाहती हों, पर इस देश की औरतें इज्जत देने के पहले जान देगा और जान लेना अपना फर्ज समझतीं हैं।

आयर —यू आर सो स्वीट ऐन्ड सो स्टुपिड ! तुमको हमारा साठ चलना होगा।

(झटके से आयर की तलवार खींचकर तन जाती है।)

माया —तुम्हारी तलवार तुम्हारे खून की प्यासी हो उठी है। घर से बाहर निकलो।

आयर —हमारा पिस्टौल टैयार। हम गोली मार डेगा। फेंको मेरा सोर्ड।

माया —ऐसा नहीं होगा।

आयर —होगा।

(पिस्तौल छूटती है। गोली माया के हाथ में लगती है। तलवार गिर पड़ती है। आयर माया का हाथ पकड़कर घसीटते हुए ले जाते हैं।)

द्वितीय दृश्य

[स्थान—कुँवर सिंह का सैन्य-शिविर। कुँवर सिंह और मन्त्री हरेकृष्ण सिंह बातें कर रहे हैं।]

कुँवर —मन्त्रीजी, क्या यह सत्य है कि अंग्रेज सेनापति मि० मिलमैन भाग गये ?

हरेकृष्ण —भाग ही नहीं गये, बल्कि अपनी सम्पूर्ण युद्ध-सामग्री हमलोगों के लिए छोड़ गये।

कुँवर —हम अपनी ताकत को भूल बैठे थे मंत्रीजी। आज जब हमें होश आया तो दुश्मन की पीठ हमारे सामने पड़ रही है। मिलमैन समझते थे कि हम भाग गये, और इसीसे वे बेचारे आम के बाग में चाय और बिस्कुट से भिड़ गये। लेकिन रात्रि के अन्धियारे में ही हमें राह मिल गई। शत्रु पर आक्रमण किया और मिलमेन अपनी गौरी सेना के साथ भागते नजर आये।

हरेकृष्ण—बीरोभंज की हार का बदला हमने मिसमीत से अच्छी तरह लिया महाराज। हमें इस जीत पर संतोष है।

कुंवर—नहीं मन्त्रीजी, हमें दुःख है। हम अपनी जन्म-भूमि को खोकर विजयी हुए। इस जीत से लाभ क्या? गोरा आयर जगदीशपुर की सारी शोभा को नष्ट-भ्रष्ट कर चुका है। हमारा हृदय रह-रह कर मसोस उठता है। हमें जगदीशपुर का उद्धार करना है, आयर को उसकी क्रूरता का दण्ड देना है।

हरेकृष्ण—तो क्या हम जगदीशपुर की ओर वापस चलें।

कुंवर—हम जगदीशपुर नहीं पहुँच सकेंगे मन्त्रीजी—जगदीशपुर नहीं पहुँच सकेंगे। हम आगे बढ़ेंगे। हम समुद्र के बीच में कूदना चाहते हैं। उसकी वेगवती धाराओं से टक्कर लेना चाहते हैं। मिसमीत की हार से गोरों के बीच खलबली मचेगी, और हम समझते हैं कि हमें कुचलने के लिए कुछ बाकी नहीं रखा जायगा।

हरेकृष्ण—जो आज्ञा?

कुंवर—सेना को आज्ञा दीजिये कि आगे बढ़ें, ब्रिटिश सरकार की छाती की पंजरियों को पूरी तरह से झकझोर दे, उसके जोश को पीस कर उसे होश में ला दे।

(आवेश में रणजीत सिंह का प्रवेश)

रणजीत—महाराज! महाराज!!

कुंवर—क्या हुआ रणजीत?

रणजीत—महाराज, सारा जगदीशपुर ध्वंस हो गया।

कुंवर—अच्छा हुआ। हमें उसके लिए और रोने की जरूरत नहीं है। अगर हम जिन्दा रहे, तो जगदीशपुर को फिर बसा लेंगे, गढ़ी में फिर घी के दीप जला लेंगे।

रणजीत—केवल महाराज, जगदीशपुर की यह हालत नष्ट हो गयी है, जो आपके पूर्व-पुरुषों की की लिखी, जो हमारी जीत का स्वप्न और प्रतिज्ञा की मजबूमि थी।

कुंवर—तुम्हारा मतलब?

रणजीत—हमारा मतलब उस शिव-मन्दिर से है, जहाँ हमने देव शक्ति की उपासना की थी, जहाँ हमें शक्ति मिली थी, जहाँ हमने रक्तदान दिया था।

कुंवर—गोरों ने शिवाला नष्ट कर दिया, पर भगवान शंकर की शक्ति को नष्ट नहीं किया है। वह शक्ति अब भी तुम्हारे उस हृदय के अन्दर बन्द है, जिसके जोर से तुमने शत्रु सेना को पराजित किया है।। हम फिर शिव-मन्दिर बना लेंगे, रणजीत।

रणजीत—इतना ही नहीं, आयर ने हमारी लाज-रूपी निधि पर डाका डाला है। क्या इसकी भी पूर्ति आप कर सकेंगे, महाराज?

कुंवर—कैसी लाज, रणजीत?

रणजीत—मन्त्री हरेकृष्ण सिंह—ओह, कहा नहीं जाता और बिना कहे रहा भी नहीं जाता।

हरेकृष्ण—क्या बात है, रणजीत सिंह? साफ-साफ कहो।

रणजीत—आयर ने आपकी कन्या माया का हरण किया है।

हरेकृष्ण—हा दुर्दैव! (सिर पीटते हैं।)

कुंवर—रणजीत सिंह, क्या यह सच है?

रणजीत—बिल्कुल सच। आयर अकेली माया का बलपूर्वक हरण करके अपने शिविर में ले गया है।

कुंवर—मन्त्रीजी! जब हमने महम की सभी स्त्रियों को हटा लिया, तो आपने माया को क्यों नहीं हटाया?

हरेकृष्ण—दुर्भाग्य! दुर्भाग्य! माया ने आने से इन्कार कर दिया।

कुंवर —तो फिर आप क्यों चले आये ? आप मेरी जमींदारी को कैसे चलाते हैं, अगर आपका घर ही आप से नहीं चलता ? मैं पूछता हूँ, क्यों आये आप यहाँ ?

हरेकृष्ण—महाराज की आज्ञा से !

कुंवर —(सक्रोध) महाराज की आज्ञा से ? क्या आप भूल गये थे कि आपकी विधवा कन्या निराश्रिता है ? क्या आपने मुझे याद दिलायी थी कि जगदीशपुर की लाज छोड़कर हम आगे क्यों बढ़ रहे है ? क्या आपने तनिक सोचकर देखा था कि आपके चले आने से माया पर क्या बीतेगी ? आपके पास कोई उत्तर नहीं है। केवल पाश्चाताप है। लेकिन हम पश्चाताप नहीं करेंगे। हम आपकी भूल को सुधारेंगे। हम आगे नहीं बढ़ेंगे, जगदीशपुर की ओर जायेंगे। माया का उद्धार करेंगे।

हरेकृष्ण—महाराज ! क्रोध की दशा में मैं उस समय सब कुछ भूल गया था। अपनी जान बचाने के लिए मैंने माया को राक्षस का आहार बनाया।

कुंवर—आपने जान को महत्व दिया, आन को नहीं। आपने अमर होना चाहा, पर मरना नहीं। आप भूल गये कि बिना मरे कोई अमर नहीं होता। आपने छाती की धड़कन पर तर्जनी रखी, पर खोपड़ी की अक्ल पर हाथ न रखा। आपने अपनी कन्या को शत्रुओं के पंजे में छोड़कर वह पाप किया, जो विधाता ने उसे वैधव्य देकर भी नहीं किया।

रणजीत—महाराज, वापस लौटकर हम भयानक भूल करेंगे—ठीक वैसी ही भूल जो तलवार से फुन्सी फोड़कर की जाती है। फुन्सी अच्छी नहीं होती, बल्कि घाव और भयानक हो जाता है।

कुंवर —हम तुम्हारा मतलब समझते हैं। पर माया का उद्धार करना भी आवश्यक है।

रणजीत—मुझे आज्ञा दीजिये। मैं अभी आयर के सैन्य-शिविर की ओर प्रस्थान करता हूँ। मैं गोरी पल्टन के अदब-कायदों को जानता हूँ, इससे शत्रु शिविर में घुसकर माया का उद्धार कर सकूँगा—इसका मुझे विश्वास है।

कुंवर —यह काम अकेला तुमसे हो सकेगा, रणजीत ?

रणजीत—मुझे विश्वास है, मैं कर सकूंगा। अगर माया का उद्धार नहीं कर सका, तो आयर को अपनी पिस्तौल का निशाना तो बना सकूँगा। यह भी कम नहीं होगा। आप मुझे आज्ञा दें।

कुंवर —जाओ रणजीत ! भगवान् शंकर तुम्हें साहस दें। तुम नारी का उद्धार करने जा रहे हो, अन्याय से युद्ध करने जा रहे हो—तुम्हारा मंगल हो। जाओ, अभी जाओ।

तृतीय दृश्य

[स्थान : ब्रिटिश शिविर का एक भाग। मि० आयर बैठे हुए मदिरा पान कर रहे हैं। माया खड़ी है।]

आयर —माया, हैव ए पेग। (आयर शराब बढ़ाता है।)

माया —हिन्दू नारी शराब को जहर समझती है साहब।

आयर —जहर ! यू मीन पोआज्न ! नो-नो पुअर लेडी ! यह जहर नहीं होने सकता। यह हमारा टौनिक हय। युरोपियन लोग का

खास चीज हय। जरा-सा पीकर डेखो।

माया —मुझे माफ कीजिये साहब।

आयर —माफ! हम माफ करेगा, पर अपना कैम्प के बाहर नहीं ज डेगा। टुम हमारा पास रहेगा माया। यह शराब मिलि लोग का बहुत अच्छा चीज। (पीते

माया —साहब मुझ पर रहम कीजिये। मुझे छोड़ दीजिए। घर ज की आज्ञा दीजिए।

आयर —हा: हा: हा:! रहम! रहम! घर जाने का हुकुम! किस घर? टुमको घर पर कोई डेखना नहीं माँगटा। टुमको लड़ के बाड विलायट ले जाने माँगटा। टुम विलायट डेखा, नाइस कोल्ड कन्ट्री, वहाँ का सब लोग गोरा—हमारा जैसा ए बिउटीफुल कन्ट्री—यहाँ से साट समन्डर पार।

माया —तो क्या आप मुझे विलायत ले जायेंगे? सात समुद्र पार अ देश में? क्या अपने देश को, अपने धर्म को अपने पिता और इस भारतीय जीवन को मुझे छोड़ना पड़ेगा।

आयर —आफ कोर्स।

माया —नहीं, ऐसा नहीं होगा।

आयर —होगा, जरूर होगा। टुमको हमारा बाट मानने होगा। माया।

माया —मैंने अपने पिता की बात को उठाकर तो इतना कष्ट उठाया अब मैं दूसरी नादानी नहीं करूँगी। आप अगर समझाने नहीं मानेंगे, तो कहे देती हूँ कि मैं दूसरी राह पकड़ूँगी। आ जानते हैं कि मैं कई दिनों से भूखी हूँ। दूसरे के स्पर्श के अन्न-जल मैं एकदम ग्रहण नहीं करूँगी और इसी तरह अप जान दे दूँगी।

आयर —माया! यू आर सिल्ली! टुम बेवकूफ! जान डेना बेकार ब्रिटिश कैम्प से टुमारा लाश बाहर जाने सकेगा, टुम नहीं।

माया —आप शायद एक राजपूत बाला की हिम्मत देखना चाहते है। अगर यह ठीक है, तो आपका सारा सपना बेकार है। आप मुझे रोक कर पछतायेंगे साहब, जो नारी अपनी देह का मूल्य नहीं समझती, वह दूसरे की देह का मूल्य भी नहीं जानती।

आयर —हम टुमारा धमकी समझटा। टुम हमारा जान लेना मांगटा। हम मिलिटरी का आडमी। हमारा जान का कुछ कीमट नहीं। हम मरने से बिलकुल नहीं डरता।

माया —आपकी देह का मूल्य भले आपके लिए कुछ न हो, पर गोरी सरकार के लिए आयर साहब का शरीर बहुत मूल्यवान है--यह आपने जगदीशपुर जीत कर बता दिया। इसीसे कहती हूँ कि आप अपनी देह को बचाकर रखें साहब।

आयर —माया! आइ फेल टु रिकोगनाइज यू! यू आर रियेली ए राजपूट लेडी। बट आई एम सौरी, हम टुमको छोड़ने नहीं सकटा।

माया —तो क्या आपका अन्तिम निश्चय है।

आयर —यस, यस! यही हमारा आखिरी फैसला। हम टुमको बखट डेटा। टुम सोचकर जवाब डो। बाट नहीं मानने पर हमारा गोली का निशाना बनने होगा। माइन्ड इट माया।

(जाना चाहते हैं। आवेश में पिस्तौल ताने, तम्बू फाड़कर बीच से, रणजीत का प्रवेश। आयर चौंककर रुक जाते हैं।)

रणजीत---खबरदार मेजर आयर।

आयर —टुम कौन?

रणजीत—में हूँ दानापुर की पल्टन का बागी सिपाही रणजीत सिंह।

आयर —रणजीत सिंह! हू ब्रिंग्स यू हियर? टुम कैसे आया?

रणजीत—मैं महाराज कुँवर सिंह की आज्ञा से ब्रिटिश सैन्य-शिविर
आया हूँ। मुझे माया का उद्धार करना है। आप आश्चर्य
रहे होंगे, मेजर आयर कि आपके इतने कड़े पहरे के रहते
यहाँ तक कैसे चला आया। पर इसमें आश्चर्य की कोई
नहीं है। मैं ब्रिटिश सेना और उसके अदब-कायदों को जा
हूँ और इससे आपके सन्तरियों को धोखा देने में मुझे अ
कष्ट नहीं उठाना पड़ा।

आयर —सिपाही, हम तुम्हारा हिम्मट डेख कर टाज्जुब करटा। पर
हमारा डुस्मन कुँवरसिंह का आडमी। यहाँ से टुम वापस
होने सकटा।

रणजीत—जितनी आसानी से मैं यहाँ तक आया हूँ, उतनी ही आस
से मैं वापस भी जाऊँगा—अकेले नहीं, माया के साथ।
मेरी राह में बाधा डालेगा, उसे मेरी पिस्तौल का निश
बनना पड़ेगा, चाहे वह आदमी मेजर आयर ही क्यों न

आयर —सो यू मीन टु शूट मी? टुम हमको गोली मारने मांग
आइ डोन्ट फीयर! हम डरटा नहीं।

रणजीत—मैं आपसे साफ़-साफ़ पूछता हूँ मेजर साहब—आप माया
मेरे साथ जाने देंगे या नहीं?

आयर —नो-नो-नो!

रणजीत—तो फिर मेरी पिस्तौल भी गरजने को तैयार है। ई
निशाना है—आपका सिर। सावधान।

(अचानक कई ओर से ब्रिटिश सैनिक
करते हैं। उनके हाथ की बन्दूकें तनी हैं
निशाना है। रणजीत का सिर। रणजीत स्त
होता है। माया घबराती है।)

रणजीत—तो तुमलोग आ गये! यह निश्चित है कि अब मैं माया का
उद्धार नहीं कर सकूँगा, पर मेजर आयर को तो मार सकूँगा।
फिर मुझे मरने का अफसोस नहीं रहेगा।

सैनिक-(आयर से) आर्डर। आर्डर प्लीज। हुकुम मेजर।

आयर —नो-नो, पुट योर गन्स डाउन! ही इज इन द इंगलिश कैम्प।
डोन्ट किल हिम! बन्दूक नीचे करो! हम अपना कैम्प में
डुश्मन को नहीं मारेगा! (सभी बन्दूकें नीची हो जाती हैं!)

आयर —(रणजीत से) हिन्डूस्टानी बहादूर, हम तुमारा ईज्जत करटा!
माया को अपना बहन बोलटा! (माया का हाथ पकड़कर) माया,
हम मेजर आयर अपना कसूर का माफी मांगटा! रणजीत,
टुम माया को ले जाओ! हम टुमको सलाम बोलटा,
हिन्डुस्तानी बहादुर! (सलाम करना। पट-परिवर्त्तन)

चतुर्थ दृश्य

[स्थान—नदी तट पर कुवर सिंह का फौजी खेमा। कुँवर सिंह, हरेकृष्ण और सेनापति रणदलन सिंह बाते कर रहे हैं।]

कुंवर —हमारी मुसीबतों का अन्त नहीं जान पड़ता। दुश्मनों को हमने कई जगहों पर पराजित किया, पर वे समुद्र की लहर की तरह बराबर बढ़ते नजर आते हैं। ब्रिगेडियर मार्कर हाल ही में हारकर भाग गया। पर उसकी जगह आ गया कर्नल लूगार्ड। हम जगदीशपुर से काफी दूर निकल आये। कहीं पनाह

लेने के लिए भी जगह नहीं मिलती। रीवा के राजा मेरे रिश्ते-
दार हैं। पर मेरी मुसीबत में उन्होंने भी मदद करने से इन्कार
कर दिया।

हरेकृष्ण—महाराज, हम तो घर-द्वार सब कुछ छोड़ चुके। अब मोह
किसका? हमें पनाह की कौन-सी जरूरत है? हम तो मारते
हुये ही मरेंगे।

कुंवर —हमने सोचा था कि भारत के अन्य विद्रोही नेताओं से मिलकर
हम गोरों को भारत-भूमि से निकाल बाहर कर सकेंगे। लेकिन
अब जान पड़ता है कि यह मेरा स्वप्नमात्र था। दिल्ली जाने
का मार्ग बन्द है तथा अन्य नेतागण एकता की बात ही नहीं
सोचते। फिर, कैसे क्या होगा?

हरेकृष्ण—भारत में एकता की बात लानी ही व्यर्थ है, महाराज। आज
अगर हम सब मिलकर गोरी सरकार से मोर्चा लेते तो ये मुट्ठी
भर गोरे कब तक यहाँ टिकते?

कुंवर —आप ठीक कहते हैं, हरेकृष्ण जी! अगर हम सब में एकता होती,
समझने की शक्ति होती, तो यह दिन आता ही क्यों? मैं तो
रह-रह कर यही सोचता हूँ कि अगर ऐसा संग्राम होना ही
था, तो कुछ वर्ष पहले क्यों नहीं हुआ?

रणदलन--क्यों महाराज?

कुंवर —रणदलन सिंह, इस समय मैं ८० वर्ष का वृद्ध हूँ, जब शरीर का
रुधिर ठंढा पड़ जाता है, जब बुढ़ापे का घुन समस्त देह को
जर्जर बना देता है, जब प्रत्येक क्षण मृत्यु का ताण्डव नृत्य
होता नजर आता है। कुछ वर्ष पहले मैं जब युवा था, तो इस
गोरी सरकार से अच्छी तरह समझ लेता।

रणदलन--वह जवानी किस काम की, जो दीवानी न हो? वह जवान
किस काम का, जिसमें मान न हो? आज के जवान वैसे हैं,

जो जवान होने के पहले बूढ़े हो जाते हैं, जिनके खून में गर्मी
होती ही नहीं। वे क्या जानें कि वतन की पुकार किसे कहते
हैं? देश-भक्ति का महत्त्व क्या है? आन पर जान देना किसे
कहते हैं? जवानों से तो आप लाख दर्जे अच्छे हैं। आप वृद्ध हैं
उम्र से, बहादुरी से नहीं। आपकी तलवार की चमक वही
जान सकता है, जिसने उसे देखी हो। आपकी बहादुरी का
कायल वही है, जो आपके सामने गिर चुका हो।

कुंवर —ठीक कहते हैं सेनापति रणदलन सिंह। अब रोकर ही क्या होगा?
हमें तो शिव-मन्दिर की वह कसम याद है। क्यों हरेकृष्णजी?

हरेकृष्ण--वह शपथ हमारे लहू की बून्द-बून्द में है, महाराज! हम आखिरी
दम तक लड़ेंगे। स्वाधीनता प्राप्ति या मरण—यही है हमारा
लक्ष्य।

कुंवर —रणदलन सिंह, तुम आगे बढ़कर गोरी सेना से मोर्चा लो।
लूगार्ड को अपने विक्रम का परिचय दो। उन्हें बता दो कि
हम जुल्म के विरुद्ध कैसे लड़ते हैं।

रणदलन--(सिर झुकाकर) जो आज्ञा! (प्रस्थान)

कुंवर —हरेकृष्णजी, हम जगदीशपुर की ओर वापस जाना चाहते हैं।
हम गंगा पार करेंगे। तब तक रणदलन सिंह शत्रुओं को रोके
रहेंगे। गंगा पार होने पर लूगार्ड हमारा कुछ नहीं बिगाड़
सकेगा। तब हम मेजर आयर से फिर लड़ सकेंगे।

हरेकृष्ण—आपका विचार उत्तम है महाराज।

(रणजीत और माया का प्रवेश)

माया —(दौड़कर हरेकृष्ण के पास जाती है) पिताजी! पिताजी!

हरेकृष्ण--बेटी!

कुंवर —रणजीत, तुमने एक नारी का उद्धार किया है। मौत के बीच
जाकर अपने साहस का परिचय दिया है। मैं तुम्हें साधुवाद
देता हूँ, सैनिक!

रणजीत--महाराज का अनुग्रह ! मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने एक आजाद हिन्दू राजा की आज्ञा का पालन किया है। इतनी खुशी किसी गोरे अफसर की आज्ञा मानने से नहीं होती।

कुंवर —हरेकृष्णजी, आप माया के रहने का प्रबन्ध कर दें।

हरेकृष्ण—महाराज ! (कंठावरोध)

कुंवर —कहिये, अब आपको कौन-सा दुःख है? आपकी एकमात्र कन्या आपके सामने है। खोई हुई माया तो मिल गयी हरेकृष्णजी।

हरेकृष्ण---(पागल की वाणी में) ना-ना-ना, यह मेरी कन्या नहीं है—यह मेरी कन्या नहीं है। मैं इसका कोई नहीं हूँ--कोई नहीं हूँ।

कुंवर —(आश्चर्य से) क्या यह आपकी कन्या नहीं है? यह माया नहीं है? तो—तो फिर कौन है यह। रणजीत किसे खींच लाये हो तुम यहाँ?

रणजीत—महाराज, यह माया है—मंत्री हरेकृष्ण सिंह की कन्या।

कुंवर —आश्चर्य ! बोल लड़की, कौन है तू?

माया —मैं अपने बाप की बेटी हूँ। मेरी धमनियों में मंत्री हरेकृष्ण सिंह का पवित्र रक्त प्रवाहित हो रहा है।

हरेकृष्ण---माया ! माया ! तुम्हारा कहना ठीक है। पर मैं तुम्हें अपनी कन्या कहकर समाज-च्युत होना नहीं चाहता।

माया —क्यों पिताजी? मेरा दोष?

हरेकृष्ण---दोष? दोष जानना चाहती हो अपना? विधर्मियों द्वारा तुम्हारा हरण हुआ। तुम्हारा धर्म, तुम्हारी जाती नष्ट हो गई। अब कौन हिन्दू तुम्हें अपनी कन्या कहेगा? कौन इस कालिख को अपने चेहरे पर मलेगा? कौन तुम जैसी भाग्यहीना को रखकर अपने लोक और परलोक को बिगाड़ेगा?

माया —(आर्त्त वाणी में) पिताजी !

हरेकृष्ण---कौन है तुम्हारा पिता? किसकी हो तुम कन्या? विधर्मी के स्पर्श से तुम कलंकित हुई, और अब यहाँ तुम्हार कोई स्थान नहीं है।

कुंवर —(कड़ककर) हरेकृष्ण सिंह !

हरेकृष्ण—महाराज ! मैं सामाजिक जीव हूँ। समाज की मर्यादा मैं भंग नहीं करूँगा। माया अभागिन है—दुर्भाग्य की मूर्त्ति है। तभी तो बचपन में ही इसकी माँग की सिन्दूर-रेखा धुल गई। फिरंगियों ने जब जगदीशपुर पर आक्रमण किया था, तो मैंने इसे हटाना चाहा था। पर इसने—इस जिद्दी लड़की ने—हटने से इन्कार कर दिया। फिर वही हुआ जो होना था। (माया से) मैं पूछता हूँ कि तेरे मरने के लिए कोई स्थान नहीं था क्या? तू आत्म-हत्या भी नहीं कर सकी? कैसे तूने यहाँ तक आने का साहस किया?

कुंवर —मन्त्रीजी, जुबान पर लगाम दीजिये।

हरेकृष्ण—महाराज !

कुंवर —बस खामोश। हम किसी की लाल-लाल आँखें देखने के आदी नहीं हैं।—आप भूलें नहीं कि माया एक नारी है—अबला है। इसकी शक्ति इसके रक्षक—सब आप ही हैं। इसकी नादानी का इतना कड़ुआ फल इसे नहीं मिलना चाहिए। विधर्मियों के अत्याचार से अनेक नारियाँ पथभ्रष्ट हो चुकी हैं, तो क्या हम उनका परित्याग कर देंगे? हमने उन्हें बचाया क्यों नही? क्या हम दोषी नहीं हैं? फिर, हम अपने दोष की सजा इन अबलाओं को क्यों दें? इस जटिल समय में समाज को भी सोचना पड़ेगा। ऐसी सतायी स्त्रीयों को स्वीकार करना ही हमारी बुद्धिमानी होगी।

रणजीत--महाराज का अनुग्रह ! मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने एक आजाद हिन्दू राजा की आज्ञा का पालन किया है। इतनी खुशी किसी गोरे अफसर की आज्ञा मानने से नहीं होती।

कुंवर —हरेकृष्णजी, आप माया के रहने का प्रबन्ध कर दें।

हरेकृष्ण—महाराज ! (कंठावरोध)

कुंवर —कहिये, अब आपको कौन-सा दुःख है ? आपकी एकमात्र कन्या आपके सामने है। खोई हुई माया तो मिल गयी हरेकृष्णजी।

हरेकृष्ण---(पागल की वाणी में) ना-ना-ना, यह मेरी कन्या नहीं है—यह मेरी कन्या नहीं है। मैं इसका कोई नहीं हूँ--कोई नहीं हूँ।

कुंवर —(आश्चर्य से) क्या यह आपकी कन्या नहीं है ? यह माया नहीं है ? तो—तो फिर कौन है यह। रणजीत किसे खींच लाये हो तुम यहाँ ?

रणजीत—महाराज, यह माया है—मंत्री हरेकृष्ण सिंह की कन्या।

कुंवर —आश्चर्य ! बोल लड़की, कौन है तू ?

माया —मैं अपने बाप की बेटी हूँ। मेरी धमनियों में मंत्री हरेकृष्ण सिंह का पवित्र रक्त प्रवाहित हो रहा है।

हरेकृष्ण---माया ! माया ! तुम्हारा कहना ठीक है। पर मैं तुम्हें अपनी कन्या कहकर समाज-च्युत होना नहीं चाहता।

माया —क्यों पिताजी ? मेरा दोष ?

हरेकृष्ण---दोष ? दोष जानना चाहती हो अपना ? विधर्मियों द्वारा तुम्हारा हरण हुआ। तुम्हारा धर्म, तुम्हारी जाती नष्ट हो गई। अब कौन हिन्दू तुम्हें अपनी कन्या कहेगा ? कौन इस कालिख को अपने चेहरे पर मलेगा ? कौन तुम जैसी भाग्यहीना को रखकर अपने लोक और परलोक को बिगाड़ेगा ?

माया —(आर्त्त वाणी में) पिताजी !

हरेकृष्ण---कौन है तुम्हारा पिता ? किसकी हो तुम कन्या ? विधर्मी के स्पर्श से तुम कलंकित हुई, और अब यहाँ तुम्हार कोई स्थान नहीं है।

कुंवर —(कड़ककर) हरेकृष्ण सिंह !

हरेकृष्ण—महाराज ! मैं सामाजिक जीव हूँ। समाज की मर्यादा मैं भंग नहीं करूँगा। माया अभागिन है—दुर्भाग्य की मूर्त्ति है। तभी तो बचपन में ही इसकी माँग की सिन्दूर-रेखा धुल गई। फिरंगियों ने जब जगदीशपुर पर आक्रमण किया था, तो मैंने इसे हटाना चाहा था। पर इसने—इस जिद्दी लड़की ने—हटने से इन्कार कर दिया। फिर वही हुआ जो होना था। (माया से) मैं पूछता हूँ कि तेरे मरने के लिए कोई स्थान नहीं था क्या ? तू आत्म-हत्या भी नहीं कर सकी ? कैसे तूने यहाँ तक आने का साहस किया ?

कुंवर —मन्त्रीजी, जुबान पर लगाम दीजिये।

हरेकृष्ण—महाराज !

कुंवर —बस खामोश। हम किसी की लाल-लाल आँखें देखने के आदी नहीं हैं।—आप भूलें नहीं कि माया एक नारी है——अबला है। इसकी शक्ति इसके रक्षक—सब आप ही हैं। इसकी नादानी का इतना कड़ुआ फल इसे नहीं मिलना चाहिए। विधर्मियों के अत्याचार से अनेक नारियाँ पथभ्रष्ट हो चुकी हैं, तो क्या हम उनका परित्याग कर देंगे ? हमने उन्हें बचाया क्यों नही ? क्या हम दोषी नहीं हैं ? फिर, हम अपने दोष की सजा इन अबलाओ को क्यों दें ? इस जटिल समय में समाज को भी सोचना पड़ेगा। ऐसी सतायी स्त्रीयों को स्वीकार करना ही हमारी बुद्धिमानी होगी।

हरेकृष्ण--आप बड़ हैं। आप अगर कुछ करें भी तो कोई कुछ नहीं कहेगा। पर, हम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। नहीं महाराज; माया का स्थान यहाँ नहीं है।

कुंवर —तो फिर कहाँ जायेगी यह अबला ? आप तो इसके पिता हैं। क्या आपके हृदय में इसके लिए कोई स्थान नहीं है ?

हरेकृष्ण—मेरी कन्या माया मर गई। इस भाग्यहीना से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं—कोई सम्बन्ध नहीं।

कुंवर —आप पागल हो रहे है, मन्त्रीजी।

हरेकृष्ण—मैं बिल्कुल ठीक हूँ महाराज।

कुंवर —आप भूल रहे हैं कि कुंवर सिंह की आज्ञा टालने का दुस्साहस आज तक किसी ने नहीं किया।

हरेकृष्ण—मैं जानता हूँ, यह मेरा दुस्साहस है। पर आपका सिद्धांत मेरे हृदय को स्पर्श नहीं कर पाता।

कुंवर —(तीखे स्वर में) हरकृष्ण सिंह !

हरेकृष्ण—महाराज ! मेरा हृदय पाषाण हो चुका है। मेरी माया मर चुकी हैं। मुझे न तो अब आपके अनुग्रह पाने की लालसा है और न दण्ड भोगने का भय।

कुंवर —यह स्पर्द्धा ! आपका दम्भ है—नहीं, ओह ! हमने इसकी कल्पना भी नहीं की थी कि कभी आपको भी दंड देना होगा। लेकिन, आज जब देश पर आफत की काली घटा छाई है, तो हम आपके प्राण नहीं लेंगे। आप अभी जा सकते हैं।

हरेकृष्ण—महाराज !

कुंवर —कुँवर सिंह का आदेश है—जाइये।

(हरेकृष्ण का धीरे-धीरे प्रस्थान)

कुंवर —और रणजीत ! तुम माया को अभी अपने साथ रखो। सोचकर इसका प्रबन्ध करेंगे। (माया से) जाओ बेटी।

[एक ओर से रणजीत और माया का प्रस्थान, दूसरी ओर से कुँवर सिंह का प्रस्थान।]

पंचम दृश्य

[स्थान—कुँवर सिंह का सैन्य शिविर। एक ऊँचे स्थान पर कुँवर सिंह हैं। सामने रणदलन सिंह खड़े हैं।]

कुंवर—रणदलन सिंह, तुमने गोरों पर जीत पाई है। उनके सेनापति लूगार्ड को बन्दी बनाया है। हम तुम पर खुश हैं सेनापति।

रणदलन—यह महाराज का अनुग्रह है। (नत मस्तक)

कुंवर —कुँवर सिंह अभी गरीब हैं। पर, उनका दिल राजा है हम तुम्हें इनाम देंगे। लो मेरे गले का बहुमूल्य हार।

(हार उतार कर देते हैं।)

रणदलन—महाराज ! जब आप पर इतनी मुसीबत है, सेना के लिए धन की इतनी कमी है तो यह बहुमूल्य हार स्वीकार करना मैं अच्छा नहीं समझता। में इसे देशहित कार्यों के लिए अपनी ओर से महाराज के चरणों में भेंट करता हूँ। इसे स्वीकार करें प्रभो !

कुंवर —(खुश होकर) तुम्हारी आत्मा महान् है वीर ! हम तुम्हारी भेंट स्वीकार करेंगे (हार ले लेते हैं) रणदलन सिंह, अँग्रेज सेनापति कर्नल लूगार्ड कहाँ हैं ? हम उन्हें देखना चाहते हैं।

रणदलन—मैं तुरंत कर्नल लूगार्ड के साथ उपस्थित होता हूँ। महाराज।

(अभिवादन के बाद प्रस्थान)

कुंवर —यह हमारी जीत है या भीषण युद्ध का आवाहन ? इस जीत से तो वृद्धावस्था में भी मेरा रक्त नाचने लगा है।

(कर्नल लूगार्ड और रणदलन सिंह का प्रवेश। लूगार्ड के हाथों में हथकड़ी है।)

कुंवर —(कुछ आगे बढ़कर) हम आपका स्वागत करते हैं सेनापति।

लूगार्ड —व्हाट ? राजा, हमारा हाथ बँधा। व्हाट्स दिश ?

कुंवर —(देखकर) मुझे अफसोस है कि आपके हाथ बँधे हैं। रणदलन सिंह, भूलो मत कि कर्नल लूगार्ड ब्रिटिश सेनापति हैं, और इनके हाथों में हथकड़ी लगाना हमें अच्छा नहीं लगता। खोल दो हथकड़ी। (लूगार्ड बन्धन मुक्त हो जाते है।)

लूगार्ड—थैंक यू राजा।

कुंवर —कर्नल साहब, हम अपनी भूल के लिए आपसे माफी चाहते हैं। क्या आप माफ कर सकेंगे ?

लूगार्ड—आफ कोर्स। हम खेयाल नहीं करेगा राजा। लेकिन आपका कमान्डर पल्टन का कानून नहीं जानटा। ही इज जंगली।

रणदलन—कर्नल लूगार्ड, होश में आकर बातें कीजिये। आप मपनी छावनी में नहीं, हिन्दुस्तानी छावनी में है। आपकी गरम बातों से मामला और टेढ़ा पड़ जायगा। ध्यान रखिये कि यहाँ आपका इन्साफ होगा।

लूगार्ड —हमारा इन्साफ ? हा: हा: हा: ! कौन करेगा हमारा इन्साफ ? बोलो कमान्डर।

कुंवर —(गम्भीर वाणी में) कर्नल लूगार्ड ! तमीज से बातें कीजिये। हम बदतमीज को सजा देते है।

लूगार्ड —सजा ? ओ माई गॉड। आप हमको सजा देनेवाला कौन ? बोलो राजा ?

कुंवर —आप क्या अभी तक नहीं जान सके कि हम कौन हैं ? हम हैं आप के शत्रु—जगदीशपुर-नरेश कुँवर सिंह।

लूगार्ड —हम अँगरेज कमान्डर—आप इन्डियन राजा। हमारा इन्साफ आप नहीं करने सकटा।

कुंवर —क्यों नहीं कर सकते हैं हम इन्साफ ? हमने गोरों को अपने देश में अन्न-जल दिया, रहने के लिये भूमि दी, इस लिए कि वे हमारी मदद करें। आज अगर वे हमारी गर्दन पर छुरी चलायें, तो क्या हम उन्हें सजा नहीं देंगे ?

लूगार्ड —हम हिन्दुस्तान पर राज करटा। हम यहाँ का मालिक। हमारा इन्साफ करनेवाला आप नहीं।

कुंवर —अगर हम आपको राजा मान भी लें, तो क्या आपके जुल्म के विरुद्ध हम खड़े भी नहीं हो सकेंगे ?

लूगार्ड —हम आप सबको कुचल डेगा।

कुंवर —वे दिन अब लद गये कर्नल साहब। हमारी नींद टुट चुकी है। तलवार की काई धुल चुकी है। गया हुआ रक्त लौट आया है। अब तो आप सबको यह देश छोड़ना ही पड़ेगा, चाहे जैसे भी हो।

लूगार्ड —हम इस जंगली इण्डिया में आकर सबको आबाड किया, तालिम दिया, रेल चलाना, सबको पढ़ना-लिखना सिखाया।

कुंवर —आप भूल रहे हैं। इंगलिस्तान ने हिन्दुस्तान को कुछ नहीं सिखाया, बल्कि हिन्दुस्तान ने दुनिया को सब कुछ सिखाया।

लूगार्ड —शट अप राजा।

कुंवर —(कड़ककर) ब्रिटिश सेनापति ! हम गोरों से नसीहत पाने की उम्मीद नहीं करते।

लूगार्ड —हम बगावत डबाना माँगटा राजा।

कुंवर —बगावत ? यह बगावत है ? भूल गए क्लाइव की जालसाजी को जिसने बंगाल के चिराग को गुल कर दिया, जिसने वीरता और नीति की आड़ में हमारे देश में फूट की चिनगारी डाल दी ? भूल गये वारेन हेस्टिंग्ज की लुटेरी प्रवृत्ति को, जिसने

अवध की बेगमों पर अनेक जुल्म किये, जिसने डाके डाल-डालकर नवाबो दौलत से ब्रिटिश खजाना भरा, जिसने राजा चेत सिंह की इज्जत पर हमला किया ? भूल गये वेलेस्ली की दोरंगी नीति को, जिसने आजादी के दीवाने टीपू सुल्तान को मारकर मैसूर का राज्य हड़प लिया ? भूल गये न्याय के अवतार डलहौसी को, जिसने देशी राज्यों को जबर्दस्ती आत्मसात् किया ? आज सारा भारत अपमान, क्रोध और प्रतिहिंसा की अग्नि में दग्ध हो रहा है। हम अपने खोये हुए अधिकारों को प्राप्त करेंगे और "अंगरेजो, भारत छोड़ो" का नारा बुलन्द करेंगे।

लूगार्ड —हम बहस नहीं माँगटा राजा। आप हमको किस लिए यहाँ पर लाया ? जानने माँगटा।

कुंवर —हमने पहले कह दिया कि हम आपको सजा देंगे, वैसी सजा जिसकी आपने कल्पना भी नहीं की होगी।

लूगार्ड —हमारा जान लेना मांगटा ? क्या हुकुम होने सकटा ?

कुंवर —हम आर्य हैं, और हमारे यहाँ आपके लिये सबसे बड़ी सजा है क्षमा। हम आपकी धृष्टता का दण्ड "माफी" द्वारा देते हैं। आप मुक्त हैं कर्नल साहब। लौट जायें अपने शिविर की ओर। नयी सेना लेकर फिर आयें। हम तैयार मिलेंगे। बस, यही है कुँवर सिंह का इन्साफ। (जाना)

लूगार्ड —(हर्षातिरेक से) राजा ! राजा !! यू आर रियली ए ग्रेट सोल। रियली ए ग्रेट सोल। वी आर रियली सौरी टु लूज यू राजा। पटाक्षेप

तृतीयांक

प्रथम दृश्य

[स्थान : ब्रिटिश शिविर। रात। ब्रिगेडियर डगलस क्रुद्ध मुद्रा में खड़े हैं। सामने सेनापति लूगार्ड सिर झुकाये हुए हैं।]

डगलस —शेम ! शेम फौर यू कर्नल ! आइ डोन्ट लाइक टु सी यू एनी मोर।

लूगार्ड —नो नो ब्रिगेडियर डगलस, राजा कुंवर सिंह इज ए ग्रेट सोल ! वह बहुत रहमदिल आदमी।

डगलस —रहमदिल आदमी ! ब्रिकौज ही सेट यू फ्री। हैव यू इंगलिश ब्लड इन योर वेन्स कर्नल ?

लूगार्ड —डोन्ट इन्सल्ट मी एनी मोर ब्रिगेडियर। हम अब इंगलेंड जाना माँगटा। यहाँ रहना मंजूर नहीं।

डगलस —यू आर डेजर्टिंग मदर ब्रिटेनिया ऐट दिस क्रिटकल मुमेंट। यू हैव नो प्लेस इन इंगलड। आई विल शूट यू डाउन हियर।

लूगार्ड —यू आर कमिटिंग ए ब्लन्डर ब्रिगेडियर।

डगलस —हम कुँवर सिंह से लड़ना मांगटा कर्नल लूगार्ड। हम दुश्मन का खून पीना मांगटा। कुँवर सिंह बहुत इंगलिश कमान्डर को हराया। आजमगढ़ को ले लिया, अब बनारस लेना माँगटा। बट इट इज इम्पोसिब्ल। ब्रिगेडियर डगलस उसका घमण्ड तोड़ना मांगटा। (एक सैनिक का प्रवेश। अभिवादन।)

डगलस —ह्वाट डु यू वान्ट मैन ?

सैनिक —हुजूर·····

डगलस —हुजूर क्या हुआ ?

सैनिक —दरवाजे पर·····

डगलस —दरवाजे पर क्या होनेवाला ? ब्रिंग माइ गन ।

सैनिक —नो सर ।

डगलस —सो सर ? नो सर क्या ? साफ-साफ बोलो यू डेमिल ।

सैनिक —दुश्मन·····

डगलस —दुश्मन ? ओ माई गौड ! पकड़ लो दुश्मन को । हम गोली मारेगा रन अप ! जल्दी !

सैनिक —वह मिलने आया है ।

डगलस —मिलना ? डज ही वान्ट टु सी मी ? ओ० के० ! बुलाओ उसको । (सैनिक सलाम करके जाता है ।)

डगलस —दुश्मन ! स्ट्रेंज ! हू इज दैट फैलो कर्नल ?

सूगार्ड —मन बट ए ट्रेटर—वह जरूर इण्डिया का दुश्मन ।

(डगलस टहलते रहते हैं । पागल की मुद्रा में हरेकृष्ण सिंह का प्रवेश । दशा अस्त-व्यस्त । चेहरे पर घबराहट ।)

डगलस —(थोड़ी देर तक गम्भीरता से हरेकृष्ण सिंह की ओर देखने के बाद) हू आर यू ?

हरेकृष्ण---साहब !

डगलस —स्पीक । कौन हय तुम ?

हरेकृष्ण--(पागल की वाणी में) मैं अँगरेजों का मित्र हूँ । मेरा नाम है हरेकृष्ण । मैं कुँवर सिंह की बर्बादी चाहता हूँ । उनका रक्त-पान करना चाहता हूँ । उनकी लाश पर प्रेत की भाँति हाथ में रक्त भरा खप्पर लेकर भयंकर नृत्य करना चाहता हूँ । यही है मेरे जीवन की अन्तिम अभिलाषा·····आखिरी अरमान ।

डगलस ---तुम कुँवर सिंह का दुश्मन ? उसका खून पीना माँगटा ? लेकिन काहे ?

हरेकृष्ण---तो सुन लीजिये । मैं हूँ कुँवर सिंह का प्रधान मंत्री । मैं—मैं--

डगलस —(चौंककर) ह्वाट ? प्राइम मिनिस्टर आफ कुंवर सिंह ? यू आर एट्रेटर ! आइ कान्ट बिलीव यू नि० हरिकिशुन । तुम हमारा दुश्मन का आदमी—तुम भी हमारा दुश्मन ।

हरेकृष्ण---साहब ? मुझे अपनी जान का अब कोई मोह नहीं है । लेकिन, आपको यकीन दिलाता हूँ कि मैं कुँवर सिंह का दुश्मन हूँ । मैं उनका सर्वनाश चाहता हूँ । हाँ, उनका सर्वनाश चाहता हूँ । देखिये मेरी ओर । मैं अपने होश में नहीं हूँ । इस समय मेरी छाती के रक्त में नाच रही है—प्रतिहिंसा की भावना और बदले की भीषण आग । कुँवर सिंह ने मेरा अपमान किया है, प्राण-दण्ड की धमकी दी है । उनका अहंकार मैं मिटाकर ही रहूँगा, चाहे मुझे इसके लिए अपना रक्त क्यों न देना पड़े ।

डगलस —तुम पागल ? गेट आउट फ्रौम दि इंग्लिश कैम्प ।

हरेकृष्ण---हाँ, मैं पागल हूँ । अपनी कन्या के वियोग में पागल हूँ ।— नहीं नहीं, मेरी कन्या कौन है ? मैं कुँवर सिंह से बदला लेने के लिये पागल हूँ और---और इसीलिए मैं इतनी दूर, अकेले ही, इस घोर रात्रिकाल में ब्रिटिश शिविर तक आया हूँ । मैं कुँवर सिंह के सम्पूर्ण भेद आपके आगे खोल दूँगा । कुँवर सिंह शीघ्र ही आपके बन्दी हो जायेंगे ।—आप दोनों मेरी ओर अवाक् गति से क्यों देख रहे हैं ? शायद यह सोच रहे हैं कि मैं कुँवर सिंह का प्रधान मंत्री होकर उन्हें धोखा दे सकूँगा या नहीं । क्यों साहब !

दोनों —एक्जैक्टली सो ।

हरेकृष्ण---लेकिन आप गलत सोचते हैं। भारतीय इतिहास के पन्ने उलट कर देखिये। हर देश-भक्त के साथ हरेकृष्ण मौजूद रहा। उन गद्दारों के नाम विभिन्न थे, पर हरेकृष्ण के ही रूप में वे सब थे। विभीषण, जयचन्द, मालदेव, मानसिंह, जयसिंह, मीरजाफर और गुरगन खाँ आदि मेरे ही रूप में तो थे।

डगलस—कर्नर लूगार्ड, ह्वाट्स योर ओपीनियन एबाउट दिस लुनैटिक ?

लूगार्ड—आइ ऐम स्योर, ही इज ऐन इण्डियन ट्रेटर—स्योरली ए डिसलोयाल टु हिज मदरलैण्ड। वेल मि० हरेकिशुन, आप अपना देस को धोखा डेना मांगटा।

हरेकृष्ण---हा: हा: हा: ? किसका देश ! देश-सेवा का व्रत मैंने बहुत दिन पहले कुँवर सिंह के साथ ही जगदीशपुर के एक शिव-मन्दिर में लिया था, रक्त-दान भी किया था। पर, अब न तो वह शिव-मन्दिर है और न देश सेवा की भावना।

डगलस—हा: हा: हा: ! राइट यू आर मि० हरेकिशुन ! वेरी गुड आइडिया ! हा: हा: हा: !

लूगार्ड—ब्रिगेडियर डगलस, दिस फेलो इज वेरी डेन्जरस, खटरनाक।

डगलस—नो नो कर्नल, ही इज आवर फ्रेन्ड। वेल मि० हरेकिशुन, हम आपका यकीन करटा। आप हमारा डोस्ट। हाँ, टो कुँवर सिंह को अरेस्ट करने का रास्ता क्या होगा ?

हरेकृष्ण---हृदय की तह में जो रहस्य छिपाकर ले आया हूँ, वह आपके आगे रखता हूँ। सुनिये साहब, कुँवर सिंह मनोहरपुर नाम के एक गाँव में ठहरे हैं। वे शीघ्र ही गंगा पार करनेवाले हैं। आज रात में ही अगर आप मनोहरपुर पर हमला कर दें, तो वे निश्चय ही जीवित पकड़े जायेंगे।

डगलस—(खूब प्रसन्न होकर) गुड ! वेरी गुड ! हा: हा: हा:। कर्नल लूगार्ड, मार्च एटवन्स टु मनोहरपुर। फौज को हुकुम डो। आज

रात को डुश्मन को पकड़ना मांगटा। थैंक्यू मि० हरेकिशुन, हम कुँवर सिंह को फांसी पर लटकाने के बाड आपका जगदीशपुर का राजा बनायेगा। कम ऑन कर्नल। (दोनों का जाना)

हरेकृष्ण---मैं पिशाच हो उठा हूँ। मेरी दानवी अभिलाषा रक्त माँगती है—कुँवर सिंह का रक्त ! कुँवर सिंह का रक्त ! (जाना)

द्वितीय दृश्य

[स्थान : नदी-तीर। अकेली माया।]

माया—समाज ने मेरा परित्याग किया। मेरे पिता ने—पूज्य पिता ने---मेरा स्पर्श तक करना पाप समझा। तो क्या मैंने पाप किया है ? सेनापति आयर ने घायल करके मेरा हरण किया। वह मुझे अपने शिविर में ले गया। पर मैंने तो विदेशियों का छुआ अन्न-जल तक ग्रहण नहीं किया। मैंने तो हर तरह से अपनी पवित्रता बचाकर रखी। फिर मेरा दोष ? हिन्दू समाज ! तेरा नाश हो। आज मेरी तरह न जाने कितनी निर्दोष नारियाँ इस ग्रह के चक्र में पड़ी हैं। पर तेरे हृदय में दया नहीं····नहीं, अब यह जीवन व्यर्थ है। मुझे आत्महत्या करना पड़ेगा। जीवन भर ऐसी प्रताड़ना सहने से अच्छा है—इस नदी की शीतल गोद में सो जाना। तो····तो वही हो। समाज ! देख, एक पवित्र नारी तेरी वेदी पर बलि हो रही है। हे ईश्वर !

(नदी में कूदना चाहती है। आवेश में रणजीत का प्रवेश।)

रणजीत---सावधान माया।

माया —कौन रणजीत ? नो ना, मुझे मरने दो। मरने दो मुझे रणजीत।

रणजीत—मैंने आयर के फौजी खेमे से तुम्हारा इसलिए नहीं उद्धार किया कि तुम जल में डूब मरो।

माया —रणजीत, गोरा आयर पशु नहीं, मनुष्य था। लेकिन, मेरे पिता मनुष्य नहीं, पशु हैं—जिनके सीने में दिल नहीं, पत्थर है—वैसा पत्थर जिस पर लिखा है—संगदिल बाप।

रणजीत—माया ! रणजीत एक सिपाही है—उनके सीने में भी दिल है, और उस पर अमिट अक्षरों में तुम्हारा नाम लिखा है। तुम मानो या न मानो, पर मैं तुम्हारे लिए दुनिया से युद्ध कर सकता हूँ ! तुम मेरी वह बहन हो, जिसकी रक्षा का भार मुझ पर है।

माया —मेरी रक्षा क्यों करना चाहते हो रणजीत ?

रणजीत—मुझे तुमसे एक भीख लेनी है। क्या तुम दे सकोगी माया ?

माया —(कुछ हँसकर) प्रेम की भीख तो नहीं चाहते हो सैनिक ?

रणजीत—सैनिक हूँ मैं। बहन से मुझे प्रेम की भीख नहीं चाहिये। मैं एक विचित्र वस्तु माँगता हूँ तुमसे। निराश न करो, माया। बोलो दोगी ?

माया —हाँ दूँगी। अवश्य दूँगी।

रणजीत—तो मुझे चाहिये तुम्हारा ना, सोच लो पहले। दे सकोगी तुम ?

माया —तुमने गोरों से मेरी लाज बचाई है। यही मेरी दौलत है। क्या यही चाहिये तुम्हें ?

रणजीत—भूलो मत माया कि तुम मेरी बहन हो चुकी हो। मैं तुम्हारी लाज बचाने वाला हूँ, लूटनेवाला नहीं।

माया —तो फिर क्या चाहिये तुम्हें शीघ्र बोलो।

रणजीत—मुझे चाहिये तुम्हारा गरमा-गरम लाल रक्त।

माया —रक्त ? तुम मेरा रक्त चाहते हो ? आखिर क्यों ?

रणजीत—मैं तुम्हारे रक्त और अपने रक्त को देकर देश की आजादी को खरीदना चाहता हूँ।

माया —तुम्हारा मतलब ?

रणजीत—नहीं समझी तुम ? तुम नदी में डूब कर अपनी जान देना चाहती हो। समाज के डर से समाज से दूर होना चाहती हो। मैं चाहता हूँ कि तुम इस आजादी की लड़ाई में मेरी तरह भाग लो। क्षत्राणी हो तुम। हाथ में तलवार लेकर शत्रुओं से लड़ो। उन्हें भारतीय खून का जौहर दिखा दो। बता दो उन्हें कि तुम वह हिन्दू ललना हो, जिसकी इज्जत फूल नहीं; बल्कि आग का वह अंगारा है, जिसे छूना मौत को निमंत्रण देना है।

माया —(कुछ वीरत्व की भावना जागृत होती है—इस भाव में) क्या—क्या मैं भी समरभूमि में लड़ सकती हूँ रणजीत ?

रणजीत—झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम तुमने नहीं सुना ? वे तो स्वयं सेना-संचालन करके अँगरेजों को कई जगहों पर पराजित कर चुकी हैं।

माया —ठीक है, तुम्हारी माँग पूरी होगी। मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगी। अपना रक्त, अपनी जान जननी-जन्मभूमि के युद्ध में अर्पित करूँगी। मैं क्षत्राणी हूँ। तलवार चलाऊँगी। मुझे मर्दाने कपड़े दो रणजीत। दो एक तेज तलवार। मेरा रुधिर खौल उठा है। बस, अब युद्ध ! केवल युद्ध !

(जाना)

रणजीत—माया ! मुझे खुशी है कि तुमने अपने पथ को पहिचाना। अब तुम्हारी मृत्यु से भी मुझे गौरव होगा। सचमुच गौरव होगा।

(जाना)

तृतीय दृश्य

[स्थान—गंगा का वक्ष-स्थल। घोर रात्रि। घन-गर्जन। गंगा के वक्ष-स्थल पर कई नावें धीरे-धीरे जा रही हैं। सबसे पीछे कुँवर सिंह हैं। एक नाव पर मर्द-वेश में माया, रणजीत सिंह तथा सैनिकगण हैं। सभी हथियारबंद है।]

कुंवर —सुना तुमने रणजीत ? अंगरेजों को खूब चकमा दिया। हम जहाँ गंगा पार करने को थे, उससे सात मील दूर पार उतर रहे हैं। दुश्मन हमारे यहाँ होने की कल्पना भी नहीं करेंगे।

रणजीत—अंधेरी रात में हमें सफलता मिली। अब हम शीघ्र गंगा पार करके जगदीशपुर की ओर बढ़ेंगे।

कुंवर —हम जगदीशपुर पहुँचने के लिए बेचैन हो रहे हैं रणजीत। हर क्षण अपने घर का मधुर आनन्द हमें याद आता है क्यों माया, तुम चुपचाप क्यों हो ? तुम्हारा यह वीर वेश तो बड़ा आकर्षक जान पड़ता है। तुम हरेकृष्ण सिंह की कन्या नहीं हो, कुँवर सिंह की कन्या हो। हमें तुम पर नाज है बेटी। अगर भारत की हर नारी में वीरत्व की ऐसी ही भावना आ जाये, तो फिर अबला की जगह उन्हें सबला कहना पड़ेगा।

माया —अगर आपकी तरह वीर और दयालु पिता हों, तो भारत की बेटियाँ अवश्य सबला कहलायें।

कुंवर —(हसते हुए) ठीक कहा तुमने। क्या तलवार चला सकती हो माया ?

माया —अवश्य। मौका आने दीजिये महाराज।

कुंवर —हम जगदीशपुर की ओर लौट रहे हैं माया। जगदीशपुर पर अधिकार करने के लिए घोर युद्ध करना पड़ेगा। तभी हम तुम्हारी बहादुरी देख सकेंगे।

रणजीत—सुना है कि छोटे सरकार ने पहले से आपके लिए गद्दी को जीत कर रखा है। अँगरेज वहाँ से हट गये हैं।

कुंवर —और''''और दुष्ट आयर कहाँ गया ?

रणजीत—मेजर आयर तो पहले ही इलाहाबाद चले गये थे।

कुंवर —अफसोस, मैं उसे दंड नहीं दे सका।

(दूर पर बन्दूकों की आवाज)

सब —(चौंककर) यह क्या ?

कुंवर—शायद अँगरेजों को यह पता चल गया कि हमलोगों ने उन्हें धोखा दिया है। लेकिन, हम पूछते हैं कि किस शैतान ने हमारा भेद उन्हें बता दिया ? यह अवश्य अपने दल के किसी आदमी का काम है।

रणजीत—लेकिन महाराज, अपना आदमी यह भेद कैसे खोल सकता है।

कुंवर —वह शत्रुओं से मिला है, और बर्बादी चाहता है।

रणजीत—आप किस पर सन्देह करते हैं ?

कुंवर —यह सन्देह नहीं, मेरा पूर्ण विश्वास है।

रणजीत—तो कौन है वह व्यक्ति ?

कुंवर —मन्त्री हरेकृष्ण सिंह।

रणजीत—(सविस्मय) हरेकृष्ण सिंह !

माया —(सविस्मय) पिताजी !

कुंवर —कुँवर सिंह की अन्तर्भेदिनी दृष्टि आदमी को पहिचानने में भूल नहीं कर सकती। तुमलोगों को यकीन न हो, तो पता चलाओ कि हरेकृष्ण कहाँ हैं ? (फिर बन्दूकों की आवाज)

शत्रु निकट आ गये। अब इसी जगह पर युद्ध करना होगा। लेकिन, हमें हरेकृष्ण सिंह को पहले पकड़ना है। कौन कर सकेगा यह काम ?

रणजीत---मैं गद्दार हरेकृष्ण सिंह को बन्दी बना सकूँगा।

माया —नहीं महाराज, यह काम मुझे सौंपिये। मैंने अभी आपको कहा है कि मौका आने पर मैं अपना जौहर दिखाऊँगी। यही मौका है। मुझे कुछ कर दिखाने दें।

कुंवर —माया, यह काम बड़ा टेढ़ा है। हरेकृष्ण गोरों के साथ होंगे। वहाँ जाकर बन्दी बनाना मौत से खेलना है। फिर, तुम उनकी कन्या भी हो। ना, तुमसे यह काम नहीं हो सकेगा।

माया —(दृढ़ वाणी में) अवश्य हो सकेगा। हरेकृष्ण सिंह आपके मंत्री भले हों, पर अब मेरे पिता नहीं हैं। वे देशद्रोही हैं। उनके लिए माया के हृदय में तनिक भी मोह नहीं है।

कुंवर —अच्छी बात है। जाओ माया ! खींच लाओ यहाँ अपने गद्दार बाप को। एक बात और। अगर तुम्हारे हृदय में अपने बाप के लिए कुछ भी दया का भाव उपजे, तो फिर मेरे पास लौट कर अपना मुँह न दिखाना, जाओ गोरी सेना की ओर।

माया —जो पुरुष अपनी कन्या से, अपने स्वामी से, अपने देश से, अपने भाइयों से द्रोह कर सकता है, वह माया की दया का पात्र कदापि नहीं हो सकता। कदापि नहीं हो सकता।

(सवेग प्रस्थान)

कुंवर —देखा तुमने रणजीत ? कैसा विश्वासघात है ? क्या सचमुच भारत की मिट्टी में नमकहरामी ही भरी है (बन्दूक-ध्वनि)

रणजीत---आगे बढ़िये महाराज। हम दो ही यहाँ हैं। सब आगे निकल गये। चलिये शीघ्र। शत्रु अन्धेरे में गोली चला रहे हैं।

कुंवर —हम गोरों की गोली से नहीं डरते रणजीत। कुँवर सिंह को मारनेवाली गोली अभी बनी कहाँ है ? अभी तो—

(इतने ही में शत्रु की एक गोली कुंवर सिंह के दाहिने हाथ में लगती है।)

रणजीत---(घबराहट के स्वर में) महाराज !

कुंवर —घबराओ मत। हम कह चुके हैं कि कुंवर सिंह को मारनेवाली गोली अभी बनी नहीं है। कहाँ है तुम्हारी तलवार ?

रणजीत---(अपनी तलवार खींचकर) आज्ञा !

कुंवर —तलवार के पूरे धार से मेरी दाहिनी भुजा को मेरे शरीर से फौरन जुदा कर दो। गोली विष से तर है और उसका असर बुरी तरह हो रहा है।

रणजीत—मुझसे ऐसा निर्मम कार्य नहीं होगा।

कुंवर —(कुछ हँसकर) भावुक सैनिक ! तुम डर गये ? देखो इधर। (अपनी तलवार खींचकर भुजा काटते हुए) माँ गंगे ! लो अपने दीन-हीन पुत्र कुंवर सिंह का प्रसाद। ग्रहण करो रक्त से लथपथ मेरी भुजा को माँ।

(भुजा जल में फेंक देते हैं। जल में शब्द होता है। रणजीत अपने वस्त्र को चीरकर घाव पर पट्टी बाँधते हैं।)

रणजीत---यह क्या किया आपने महाराज ?

कुंवर —बुरा नहीं किया रणजीत। बढ़ो आगे !

(दोनों आगे निकल जाते हैं। सैनिकों के साथ डगलस और लूगार्ड का प्रवेश। डगलस के साथ हरेकृष्ण।)

डगलस —ह्वेअर इज दैट ओल्ड लीडर ?

लूगार्ड —गौन अवे। मि० हरेकिशुन, सौरी ! हम डेर किया। डुश्मन भाग गया।

डगलस —लेकिन कुँवर सिंह को नाव किस माँफिक मिला ? हम यहाँ का नाव डुबाने का हुकुम दिया ठा।

हरेकृष्ण---कुँवर सिंह की चालाकी से ही नावें भी उन्हें मिल गयीं। अभी भी पीछा करने पर कुँवर सिंह पकड़े जा सकते हैं।

डगलस —(खुश होकर) इज इट ? कम ऑन कर्नल। चेज दि एनेमीज टु दि लास्ट। कैप्चर दि ओल्ड लायन।

लूगार्ड —यस ब्रिगेडियर। लेट अस रन। मार्च।

(हरेकृष्ण के सिवा सबका सवेग प्रस्थान।)

हरेकृष्ण--क्या सचमुच ये गोरे कुँवर सिंह को पकड़ लेंगे ? अगर पकड़ लें तो ? ना ना, यह नहीं हो सकता। ऐसा नहीं होना चाहिये। ऐसा नहीं होना चाहिये। लेकिन, मैं ऐसा क्यों चाहता हूँ ? हृदय की दो प्रवृत्तियों में घोर युद्ध मचा है। एक चाहती है कुँवर सिंह का सर्वनाश, दूसरी चाहती है उनकी विजय। ऐसा क्यों होता है ? आन्तरिक विप्लव ने मुझे उद्भ्रान्त बना दिया है। जी चाहता है कि दाँतों से अपने कच्चे माँस को खा जाऊँ। (कुछ दूरी पर देखकर) वहाँ—वहाँ—अन्धेरे में, वह कैसी छाया है ? इधर ही आ रही है। काली छाया ! नहीं, वह अवश्य प्रेत है—प्रेत है। ओह ! रक्षा करो ! रक्षा करो !

(धीरे-धीरे पिस्तौल ताने माया का प्रवेश।)

माया —सावधान देशद्रोही !

हरेकृष्ण—मैं·····मैं देशद्रोही नहीं हूँ। मैं कुँवर सिंह का मन्त्री हूँ—कुँवर सिंह का मन्त्री।

माया —इधर देखो कायर।

हरेकृष्ण—(देखते हुए) कौन-कौन ? माया ? मेरी कन्या ?

माया —कौन है आपकी कन्या ? किसके हैं आप पिता ? माया तो कब की मर चुकी। आपके सामने खड़ी है—कुँवर सिंह के एक सैनिक की छायामूर्त्ति।

हरेकृष्ण---तो तुम कुँवर सिंह की सेना में काम करती हो माया ?

माया —हाँ काम करती हूँ। शरीर से नारी हूँ, पर कर्त्तव्य से सैनिक।

हरेकृष्ण--लेकिन, तुमने यह अच्छा नहीं किया बेटी !

माया —बेटी ? मैं अब आपकी बेटी नहीं हूँ, कुँवर सिंह की बेटी हूं। आप अब मुझे शिक्षा देने का पद छोड़ चुके हैं। आप गद्दार हैं। आपकी राह मेरी राह अलग अलग है।

हरेकृष्ण--(करुण स्वर में) माया ! माया ! क्या तुम मुझ पर हँसने आई हो ?

माया —नहीं पिताजी, कन्या बाप की हीन दशा पर कभी नहीं हंसती। वह तो अपने बाप को हमेशा ऊँचा समझती है। यहाँ तक कि अपनी ससुराल में जहाँ वह हर तरह का अपमान सहन करती है, अपने बाप की दशा पर दिये गये ताने को भी बर्दाश्त नहीं करती है। लेकिन, आपने पिता होकर अपनी पवित्र कन्या को संसार में ठोकरें खाने को छोड़ दिया। समाज के भय से अपने शरीर की पवित्र रक्त-बिन्दु को निचोड़ कर दूर फेंक दिया। आज आप और भी नीचे गिर गये। हाथ में कुल्हाड़ी लेकर आपने देवतुल्य स्वामी के प्राणों पर आघात किया, अपनी जननी के गले की दासत्व-शृंखला को उतारने के बदले और कस दिया। ऐसा क्यों किया ? क्यों आप इतने पतित हो गये ? आप कुछ बोलते क्यों नहीं ? बोलिये, बोलिये।

हरेकृष्ण—मेरे पास कोई उत्तर नहीं है—कोई उत्तर नहीं। कोई शक्ति है, जो मुझे चला रही है—मुझमें अंकुश का काम कर रही है। मैं खुद समझ नहीं पाता कि मैं ऐसा क्यों हो गया ? मुझे याद आता है वह समय, जब मैंने कुँवर सिंह के साथ जगदीशपुर के शिव-मन्दिर में अपना रक्त-दान करके देश-भक्ति की शपथ ली थी। पर आज—मैं स्वयं देश-द्रोही हो गया।

माया —मुझे क्षमा कीजिये। दगाबाज बाप के लिए मेरे पास दवा नहीं है। मैं आपको बन्दी बनाने आयी हू। आप अगर चाहें, तो तलवार चलाकर मेरा विरोध कर सकते हैं।

हरेकृष्ण—तुम पर मैंने काफी अत्याचार किया है, अब तलवार चलाना नहीं चाहता। मैं देश-द्रोही हूँ। बना लो मुझे बन्दी। ले चलो कुँवर सिंह के पास।

माया —तो वही हो।

(बन्दी बनाना चाहती है। इतने में दूर से एक गोली आकर माया को लगती है। वह धराशायी होती है।)

हरेकृष्ण—माया ! माया !! (संभालना)

माया —पिताजी, मैं अपना कर्तव्य नहीं कर सकी। अच्छा हुआ। मैं महाराज के आज्ञानुसार उन्हें अपना मुंह भी नहीं दिखा सकूँगी। पर आप····वहाँ जायें क्षमा····जय भारत····। (मृत्यु)

हरेकृष्ण—(नेत्रों में आँसू—पागल भाव) माया ! माया !!

डगलस —मि० हरेकिशुन, कुँवर सिंह का जासूस मारा गया।

हरेकृष्ण—आपने कुँवर सिंह के जासूस पर गोली नहीं चलाई, बल्कि, मेरी बेटी पर गोली चलाई।

डगलस —(भरी वाणी में) ओ माई गॉड !

हरेकृष्ण —नहीं साहब, यह मेरी गद्दारी की सजा है। मैंने दूसरे का घर बर्बाद करना चाहा, पर मेरा ही घर बर्बाद हुआ। मैंने दूसरों का खून बहाना चाहा, पर मेरे ही बदन का खून बहा। मैंने कभी ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नहीं किया। पर, आज समझा कि ईश्वर है, नहीं तो मेरे इस भयानक पाप का दण्ड कैसे मिलता ? कैसे मिलता ? अब नहीं, आता हूँ—आता हूँ, माँ गंगे ! तेरी गोद में विश्राम लेने आता हूँ, अपने पापों को धोने के लिए आता हूँ। (सवेग प्रस्थान। डगलस खड़े रहते हैं)

चतुर्थ दृश्य

[स्थान—जगदीशपुर का महल। कुँवर सिंह रुग्णावस्था में चारपाई पर लेटे हैं। कटे हाथ पर पट्टी है। बगल में खड़ा रणजीत। कुँवर सिंह के स्वर में कम्पन है। सामने वैद्यराज के हाथ में दवा की एक शीशी है।]

कुंवर —नहीं, अब और नहीं। खाट पर पड़ा रहना अच्छा नहीं लगता। हाथ के इस भयंकर घाव ने मुझे बहुत कमजोर बना दिया है। इधर शत्रुओं की सेना चारों ओर से जगदीशपुर की ओर बढ़ रही है।

रणजीत—आप चिन्ता न करें महाराज ! हमलोग घोर युद्ध करेंगे। आप तो जानते हैं कि आपके अनुज बाबू अमर सिंह कसम खाकर गोरों से युद्ध करने गये हैं।

कुंवर—ये गोरे चैन नहीं लेने देंगे। उस पर भी हरेकृष्ण उधर ही मिल गये। उफ् ! रणजीत ! रणजीत !! क्या आदमी इतना शीघ्र बदल सकता है ?

रणजीत—जो आदमी अपनी सन्तान के स्नेह को भूल सकता है, वह सब कुछ कर सकता है।

कुंवर—माया अपने बाप को बन्दी बनाने गई थी, लेकिन, अब तक वापस नहीं लौटी। शायद वह भी दुश्मनों से मिल गई।

रणजीत—नहीं महाराज, माया ने आपकी आज्ञा के पालन में अपनी जान दे दी। अभी-अभी खबर मिली है कि जिस समय वह अपने बाप को बन्दी बना रही थी, उसी समय किसी गोरे ने उसे गोली मार दी।

कुंवर—क्या सचमुच माया ने कर्त्तव्य-पालन में प्राण दे दिये ? उसने अपना वचन अच्छी तरह निभाया, रणजीत । हम उसकी मृत्यु पर शोक नहीं करेंगे—शोक नहीं करेंगे ।

रणजीत—यह भी खबर है कि हरेकृष्ण अपनी कन्या की मृत्यु के बाद गंगा में डूबने जा रहे थे, पर गोरों ने उन्हें पकड़ कर बन्दी बना लिया ।

कुंवर—हा: हा: हा: ! हरेकृष्ण गोरों के हाथों बन्दी हुए । यह भी अच्छा ही रहा । ये गोरे आदमी को खूब पहिचानते हैं । उन्होंने समझा होगा कि जो अपने मालिक से विश्वासघात कर सकता है, वह दुनिया को धोखा दे सकता है । वैद्यराज, जरा जल दीजिये ।

वैद्यराज-(पानी देते हुए) लीजिए महाराज !

(कुंवर सिंह जल पीकर पात्र लौटा देते हैं ।)

कुंवर—सूर्यास्त हो रहा है वैद्यराज ।

वैद्यराज--क्या कहते हैं महाराज ?

कुंवर—मैं ठीक कहता हूं । आप सभी रोगों के निदान जानते हैं, पर मृत्यु का नहीं । इस घाव का विष मेरे सारे शरीर में फैल गया है ।

वैद्यराज--महाराज, आप चिन्तित न हों । आप अवश्य अच्छे हो जायेंगे । मैंने आपको विष काटनेवाली दवा दी है ।

कुंवर—कितने दिनों के बाद आज जननी जन्मभूमि की गोद में बैठ सका हूँ । यह आनन्द अपूर्व है रणजीत ।

(नेपथ्य में कोलाहल । "अमर सिंह की जय" के नारे ।)

कुंवर—(प्रसन्नता से) आ गया अमर—हमारा विजयी भाई ! रणजीत, उसे आदरपूर्वक यहाँ ले आओ । (रणजीत का प्रस्थान)

वैद्यजी, हमारे जीवन की यह सबसे बड़ी विजय है । हम आज आजाद जगदीशपुर के निवासी हैं ।

(सैनिकों और रणजीत के साथ अमर सिंह का प्रवेश । अमर सिंह के हाथ में ब्रिटिश झंडा—यूनियन जैक—है । वे दौड़कर कुंवर सिंह के चरण छूते हैं । कुंवर सिंह उन्हें उठाते हैं ।)

अमर—दादा, आपके आशीर्वाद से हमें जीत का सेहरा मिला । सेनापति लीग्रेन्ड मेरी तलवार से दो टुकड़े कर दिया गया । यह है गोरों का झंडा ।

(कुंवर सिंह के चरणों के निकट डाल देते हैं ।)

कुंवर—मैं तुम्हारी जीत की आशा में बैठा था अमर । आज मेरा स्वप्न पूरा हुआ, मेरी कल्पना साकार हुई, आज हम आजाद जगदीशपुर में हैं । अफसोस है कि हम दूसरों को आजाद नहीं कर सके ! लेकिन मैं जानता हूं, स्वतंत्रता—देवी बलि चाहती है । मानव-रक्त पाकर वह अवश्य प्रसन्न होगी, भारत अवश्य आजाद होगा, और गोरे जरूर यहाँ से भागेंगे । रणजीत, कहाँ है मेरा राजमुकुट ? शीघ्र ले आओ । (रणजीत मुकुट लाते हैं) अमर, यह है आजाद जगदीशपुर का राजमुकुट । हमारे बाद तुम यहाँ के राजा हुए ।

अमर—दादा ! दादा !!

कुंवर—तुम जानते हो अमर कि मैं पुत्र-पौत्र-हीन हूं । पर मुझे उसका कोई दुःख नहीं है । तुम ही हो मेरे योग्य उत्तराधिकारी । इधर आओ । (अमर निकट जाते हैं । कुंवर सिंह राजमुकुट पहनाते है) आज से तुम दिलीपपुर के ही नहीं, बल्कि, जगदीअपुर के भी राजा हो ।

अमर—लेकिन आप दादाजी ?

कुंवर —मेरी चिन्ता छोड़ दो अमर। एक बात और सुन लो, मेरे योग्य भाई। यही है हमारी वह जन्मभूमि, जिसको बचाने के लिए हमने अपना खून पानी की तरह बहाया, दुश्मनों से गहरी लड़ाई मोल ली और अपने शरीर के अंग-अंग को कुर्बान कर दिया। देखते हो मेरा दाहिना हाथ ? इसे दुश्मन की तलवार ने नहीं काटा है, इसे किसी बीमारी ने नष्ट नहीं किया है। इसको स्वयं मैंने काटा है। माँ गंगा को अपने हाथ की बलि दी है। यह स्वतंत्रता अनमोल है अमर। इसे बचाकर रखना होगा। रखना होगा आनेवाली सन्तान के लिये—उसके सुख के लिये।

अमर —मेरे प्राण के साथ यह धरोहर रहेगा। प्राण दूँगा, पर आज़ादी नहीं दूँगा।

कुंवर—अब और नहीं। यह मेरे जीवन की सन्ध्या है। भगवान शंकर ! आज मेरा यज्ञ पूरा हुआ। मुझे छुट्टी दो देव। जय शंकर···· जय शंकर····· । (मृत्यु)

अमर —दादा ! दादा !!

रणजीत—महाराज ! महाराज !! (सब रो पड़ते हैं)

अमर —रणजीत, दादाजी देश के लिए शहीद हुए हैं। भारत के इतिहास में इनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। जगदीशपुर के महल की एक-एक ईंट, यहाँ के हरे-भरे खेत, कल-कल निना-दिनी गंगा की प्रखर धारा और भारत का शीतल पवन युग-युग तक इस देश की सन्तान को इस वृद्ध की वीरता के गीत सुनाया करेंगे। आओ रणजीत, आइये वैद्यराज, हम नत-मस्तक होकर इस महान् वीर के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(सभी नत-मस्तक होते हैं। यवनिका-पतन।)

समाप्त

पूजा डान्स

१. प्रथम दृश्य — Zoom का चश्मा चोर
२. द्वितीय दृश्य — गंगा मैया और मछुआरे
— xx घड़ा डान्स — सोना रानी —
३. तृतीय दृश्य — शिव मंदिर गंगा —
४. चतुर्थ दृश्य — लाल परी
— xx — आखरी दृश्य शादी
५. पांचवां दृश्य — नृत्य सोना — हरियाली की सीख - फल
६ छठा दृश्य —
— xx x — नृत्य कौवा सोना —
७ सातवां दृश्य —
८ आठवां दृश्य — मोर नृत्य
— x x — नृत्य मेरा - शक्तिमान
९ नवां दृश्य —
— x x — नृत्य मेरे वतन के लोगो सोना —
१० अन्तिम दृश्य —

ગુજરાતી વ્યાકરણ

૧. નામ

૨. સર્વનામ

૩. વિશેષણ

૪. ક્રિયાપદ

૫. અવ્યય

૬. કારક

૭. સમાસ

૮. વાક્યરચના

૯. વાક્યપ્રકાર

૧૦. અલંકાર

૧૧. છંદ

૧૨. રૂઢિપ્રયોગ અને કહેવત